–: षष्टम अध्याय :–

श्यौराज सिंह ' बेचैन' के साहित्य की भाषा और शिल्प

प्रास्ताविक:-

पूर्ववर्ती अध्यायों में हमने श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी चेतना को स्पष्ट करते हुए उसमें बेचैन जी के योगदान को निरूपित किया है। इस अध्याय में पात्र परिकल्पना और परिवेश के संदर्भ में आलोच्य साहित्यों की भाषा के स्वरूप को खंगालने की चेष्टा की गई है। साथ ही हम भाषा के विभिन्न आयामों का विश्लेषण इस अध्याय में करने का उपक्रम रखते हैं। इस अध्याय के अंतर्गत ध्वनि-विचार से लेकर प्रोक्ति-विचार तक की भाषा-यात्रा तय की गई है। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि या स्वनिम है। उसके पश्चात बेचैन जी के साहित्य की भाषा तथा उसके शिल्प को क्रमशः लिया गया है। उन सबकी चर्चा में उदाहरण आलोच्य साहित्य से ही लिए गए हैं। अध्याय के अंत में अध्यायगत निष्कर्ष और तदुपरांत संदर्भानुक्रम को रखा गया है।

प्रस्तुत अध्याय में हमने बेचैन जी के साहित्य की भाषा के विविध आयामों को विश्लेषित करने का उपक्रम रखा है। भाषा की सबसे छोटी इकाई तो 'ध्वनि' है, परन्तु ध्वनि का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता । ध्वनि के बाद की इकाई वर्ण है । वर्ण को अक्षर भी कहते हैं। वर्ण दो या दो से अधिक ध्वनियों का समूह है। उदाहरणतया 'क' वर्ण है, वह 'कू' + 'अ' से निष्पन्न हुआ है। इसमें दो ध्वनियाँ हैं । 'त्र' वर्ण है। वह 'त्' + 'र' + 'अ' के योग से बना है। जैसा कि कहा गया है 'ध्वनि' का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता, परन्तु अकेले वर्ण का कहीं-कहीं अर्थ निष्पन्न होता भी है। कई एकाक्षरी वर्ण सार्थक भी होते हैं। जैसे 'ख' माने आकाश, "भू' माने पृथ्वी। दूसरे कुछ वर्ण शब्द- निर्माण की प्रक्रिया में 'उपसर्ग' बनकर कई बार शब्द के अर्थ को बदल देते हैं। स सु, क, कु, अ, आ इत्यादि एकाक्षरी उपसर्ग है 'स' सहित का बोध देता है, जैसे 'सकारण' अर्थात् कारण सहित । इसी तरह 'सु', 'क', 'कु', 'अ', 'आ' आदि उपसर्ग अच्छा, विलोम, बुरा, बिना, पूर्णरूपेण आदि का बोध कराते हैं। अरबी-फारसी के 'उपसर्गों में 'व', 'बा', 'वे' आदि हैं। 'व'

और 'बा' सहित का अर्थ देते हैं, जबकि 'वे' उनका विलोम हैं, जैसे बनिस्बत = निस्वत सहित, बाइज्जत = इज्जत सहित, बेलगाम = बिना लगाम के (बेकाबू) आदि-आदि। अतः हमने भाषा के विविध आयामों में 'वर्ण-विचार' से लेकर 'प्रोक्ति-विचार तक की भाषाई इकाइयों को लिया है। 'वर्ण' के उपरांत 'शब्द' भाषा की दूसरी इकाई है। 'शब्द' सार्थक इकाई है। । अतः 'शब्द-विचार' के अंतर्गत हमने बेचैन जी के साहित्य में प्रयुक्त शब्दों पर विचार किया है, यथा कुमाऊं बोली के शब्द या ग्रामीण भाषा के शब्द, संस्कृत के तत्सम शब्द, अरबी-फारसी या उर्दू के शब्द मराठी के शब्द गुजराती शब्द, पारसी बोली के शब्द, बम्बईया बोली के शब्द आदि-आदि । भाषा में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे एकाधिक शब्दों के योग से बनते हैं, अतः 'मुहावरों' का अध्ययन हमने 'शब्द-विचार' के अंतर्गत ही किया है। भाषा की 'शब्द' के बाद की इकाई 'वाक्य' है । अतः 'वाक्य-विचार' के अंतर्गत हमने वाक्य से सम्बद्ध मुद्दों की पड़ताल करने का यत्न किया है। 'कहावत' का समावेश वाक्य में ही होता है, क्योंकि कहावत सम्पूर्ण वाक्य के रूप में ही उपलब्ध होती हैं। फलतः 'कहावतों' को हमने 'वाक्य- विचार' के अंतर्गत ही रखा है। 'वाक्य' के बाद की भाषाई इकाई 'प्रोक्ति' है। अतः हमने बेचैन के साहित्य में प्रयुक्त विविध प्रकार की प्रोक्तियों पर विचार करने का उपक्रम भी यहाँ रखा है। इस तरह प्रस्तुत अध्याय में बेचैन जी के साहित्य के आधार पर भाषा के विविध आयामों का विश्लेषण शोधार्थी ने किया है।

<u>भाषा का अर्थ:-</u>

"भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता।"[1] दूसरे शब्दों में-जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और दूसरों के भावो को समझ सके उसे भाषा कहते है एवं सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भी भाषा कहते है।

भाषा वह है जिसे बोला जाता है। भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना हैं जिसका अर्थ होता हैं बोलना या कहना। भाषा हमारे मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह हैं जिनके द्वारा हम अपने मन की बात किसी दूसरे व्यक्ति से बता सकते हैं।

मनुष्य या मनुष्येत्तर प्राणी कुछ विशेष ध्वनियों और संकेतों से एक दूसरे की बात को समझ लेते हैं तथा उसके प्रति अनुकूल आचरण करते हैं; क्या इन ध्वनियों और संकेतों को भाषा कहा जा सकता है? क्या बंदर द्वारा निकाली गई विशेष प्रकार की ध्वनि को भाषा कहा जा सकता है? भाषा वैज्ञानिकों ने इसका उत्तर दिया है- नहीं। तब भाषा से क्या अभिप्राय है? भाषा किसे कहते हैं? सामान्यतः भाषा से अभिप्राय है- जिस साधन द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है, उसे हम भाषा कहते हैं। **जैसे :-** बोली, जबान, वाणी विशेष।

<u>भाषा की परिभाषा:--</u>

भाषा को प्राचीन काल से विभिन्न लेखकों द्वारा परिभाषित करने की कोशिश की जाती रही है। भाषा की कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:--

(1). प्लेटो के अनुसार, "विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर हैं। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत हैं और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती हैं तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"[2]

(2). स्वीट के अनुसार, "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा हैं।"[3]

(3). वेन्द्रीय के अनुसार, "भाषा एक तरह का चिह्न है। चिह्न से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपना विचार दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं जैसे नेत्रग्राह्य, श्रोत्र ग्राह्य और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः भाषा की दृष्टि से श्रोत्रग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ हैं।"[4]

(4). ए. एच. गार्डिनर के अनुसार, "विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिन व्यक्त एवं स्पष्ट ध्वनि-संकेतों का व्यवहार किया जाता है, उनके समूह को भाषा कहते हैं।"[5]

डॉ. कामता प्रसाद गुरु :- "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों तक भलीभाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्पष्टतया समझ सकता है।"[6]
आचार्य किशोरीदास बाजपेयी :- "विभिन्न अर्थों में संकेतित शब्द समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।"[7]

डॉ. श्यामसुन्दर दास :- "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"[8]

डॉ. बाबूराम सक्सेना :- "जिन ध्वनि-चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।"[9]

मैक्समूलर के अनुसार-"भाषा और कुछ नहीं है केवल मानव की चतुर बुद्धि द्वारा अविष्कृत ऐसा उपाय है जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं और चाहते हैं कि इसकी व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नहीं बल्कि मनुष्य कृत पदार्थ के रूप में करना उचित है।"[10]

शैली का अर्थ:-

शैली हिन्दी शब्दकोश का एक शब्द है, जो अंग्रेज़ी के 'स्टाइल' का अनुवाद है और अंग्रेज़ी साहित्य के प्रभाव से हिन्दी में आया है। प्राचीन साहित्यशास्त्र में शैली से मिलते-जुलते अर्थ को देने वाला एक शब्द प्रयुक्त हुआ है- 'रीति'। 'काव्यालंकारसूत्र' के लेखक आचार्य वामन ने रीति को 'विशिष्टपद रचना' कहकर पारिभाषित किया है। इस परिभाषा में 'विशिष्ट' शब्द का अर्थ है, गुण-युक्त।

किसी भी रचना में उसे लिखने वाले या रचना करने वाले का जब तक व्यक्तित्व समाहित न हो तब तक उसमें वो अर्थ नहीं आ सकता जो उसे उसका उचित स्थान प्रदान कर सके। तात्पर्य यह है कि किसी भी उत्तम कोटि की रचना में उसकी रचना करने वाले का व्यक्तित्व झलकता ही है। उस रचना में अर्थों के प्रयोग भाषा वैशिष्ट्य आदि रचनाकार के व्यक्तित्व योग्यता कला आदि से ही समझा जा सकता है। इसी व्यक्तित्व के प्रस्फुटन को विद्वानों ने शैली नाम दिया है।

श्रेष्ठ और कालजयी रचना वही है जो बता दे कि यह अमुक व्यक्ति की रचना है। समाज पुस्तक के बजाय व्यक्ति को ज्यादा याद रखता है अतः व्यक्ति की छाप से पुस्तक भी अमर हो जाती है। रामचरितमानस यद्यपि प्रसिद्ध राम कथा पर आधारित है किंतु घर- घर में रामायण के स्थान पर रामचरितमानस की पूजा होती है क्योंकि वह समन्वय के सम्राट तुलसीदास की रचना है।

प्रसाद की कामायनी, शुक्ल की चिंतामणि, प्रेमचंद्र के कथा साहित्य, निराला की राम की शक्ति पूजा, आदि रचनायें स्पष्ट रूप से अपने रचनाकार को उजागर कर देती हैं यही विधा शैली कहलाती है।

शैली की परिभाषा :--

संस्कृत के विद्वानों ने शैली की स्वतंत्र रूप से कोई व्याख्या नहीं की है किंतु भाषा, अलंकार, शब्द- शक्ति, वक्रोक्ति, रीति, छंद, गुण, दोष आदि का तो विस्तार से विवेचन किया है, पर शैली के विषय में वे मौन रहे है। दरअसल संस्कृत साहित्य ने प्रत्येक रचनाकार को अपना व्यक्तित्व प्रस्तुत करने के लिये स्वतंत्र छोड़ रखा है और उसे किसी सिद्धांत के दायरे में नहीं बांधा है। उनकी दृष्टि में शैली प्रतिभा के अंतर्गत ही मानी गई है। शैली को आधार बनाकर पाश्चात्य विद्वानों ने इस पर अपने काफी विचार दिए हैं और लिखा है।

प्रमुख पाश्चात्य विद्वानों की शैली परिभाषाऐं प्रस्तुत है-

चेस्टरफील्ड - "विचारों के परिधान को शैली कहते है।"[11]

मरी - "भाषा के उस वैशिष्टय को शैली कहते है, जो भावों और विचारों को उचित ढंग से प्रेषित करता है।"[12]

हिन्दी के समीक्षकों और विचारकों ने भी शैली की परिभाषाएं प्रस्तुत की है, उनमें प्रमुख निम्न प्रकार है-

डॉ. श्यामसुन्दर दास -" किसी कवि या लेखक की शब्द - योजना, वाक्यांशों का प्रयोग वाक्यों की बनावट और उनकी ध्वनि आदि को ही शैली है।"[13]

डॉ गुलाबराय - "शैली शब्द के दो - तीन अर्थ है- एक तो वह अर्थ है, जिसमें कि यह कहा जाता है कि शैली ही मनुष्य है वहां इस अर्थ में शैली, अभिव्यक्ति का वैयक्तिक प्रकार है। दूसरे अर्थ में शैली अभिव्यक्ति के सामान्य प्रकारों को कहते है। भारतीय समीक्षाशास्त्र की रीतियां इसी अर्थ में शैलियां है । तीसरे अर्थ में शैली, वर्णन की उत्तमता को कहते हैं, जब हम किसी रचना के सम्बन्ध में कहते हैं - यह है शैली या किसी की अलोचना करते हुए कहते हैं कि यह

क्या शैली है? वे क्या जानें कि शैली क्या है ? तब हम इसको इसी अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। शैली में न तो इतना निजीपन हो कि वह सनक की हद तक पहुच जाये और न इतनी सामान्यता हों कि वह नीरस और निजींव हो जाये। शैली अभिव्यक्ति के कुछ गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक का कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप में दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[14]

रामदहिन मिश्र - "किसी वर्णनीय विषय के स्वरूप को खड़ा करने के लिए उपयुक्त शब्दों और उनकी योजना को शैली कहते हैं।"[15]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भावों को प्रधानता दी है किंतु उन्होंने बिना शैली के किसी रचना को उत्तम कोटि का बिल्कुल नहीं माना है। वस्तुतः शुक्ल जी ने शैली को विशेष रूप से ही देखा है उनके अनुसार समय के अनुरूप अपने उदात्त विचारों को इस प्रकार प्रस्तुत करना कि जो वह कहना चाहता है वह दूसरों तक पहुंच जाये अर्थात् विचारों का प्रभावी यथार्थ रूप में दूसरों तक पहुंचाना ही शैली मात्र है।

<u>लोकोक्ति का अर्थ:–</u>

किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को 'लोकोक्ति' कहते हैं। दूसरे शब्दों में- "जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धृत किया जाता है वह तो लोकोक्ति कहलाता है। इसी को कहावत कहते है।"[16]

उदाहरण- 'उस दिन बात-ही-बात में राम ने कहा, हाँ, मैं अकेला ही कुँआ खोद लूँगा। इस पर सबों ने हँसकर कहा, व्यर्थ बकबक करते हो, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' । यहाँ 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है 'एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता'।

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक + उक्ति' शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है- लोक में प्रचलित उक्ति या कथन'। संस्कृत में 'लोकोक्ति' अलंकार का एक भेद भी है तथा सामान्य अर्थ में लोकोक्ति को 'कहावत' कहा जाता है।

चूँकि लोकोक्ति का जन्म व्यक्ति द्वारा न होकर लोक द्वारा होता है अतः लोकोक्ति के रचनाकार का पता नहीं होता। इसलिए अँग्रेजी में इसकी परिभाषा दी गई है- "A proverb is a saying without an author"[17] अर्थात लोकोक्ति ऐसी उक्ति है जिसका कोई रचनाकार नहीं होता।

वृहद् हिंदी कोश में लोकोक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी गई है:--

"'विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, संक्षिप्त, लोकप्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं, जिनका प्रयोग किसी बात की पुष्टि, विरोध, सीख तथा भविष्य-कथन आदि के लिए किया जाता है।"[18]

'लोकोक्ति' के लिए यद्यपि सबसे अधिक मान्य पर्याय 'कहावत' ही है पर कुछ विद्वानों की राय है कि 'कहावत' शब्द 'कथावृत्त' शब्द से विकसित हुआ है अर्थात कथा पर आधारित वृत्त, अतः 'कहावत' उन्हीं लोकोक्तियों को कहा जाना चाहिए जिनके मूल में कोई कथा रही हो। जैसे 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' या 'अंगूर खट्टे होना' कथाओं पर आधारित लोकोक्तियाँ हैं। फिर भी आज हिंदी में लोकोक्ति तथा 'कहावत' शब्द परस्पर समानार्थी शब्दों के रूप में ही प्रचलित हो गए हैं।

लोकोक्ति किसी - न - किसी घटना पर आधारित होती है। इसके प्रयोग में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है। ये भाषा के सौन्दर्य में हमेंशा वृद्धि करती है। लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना होती है और उससे निकली बात बाद में लोगों की जुबान पर जब चल निकलती है, तब वह 'लोकोक्ति' हो जाती है।

बहुत अधिक प्रचलित और लोगों के मुँहचढ़े वाक्य **लोकोक्ति** के तौर पर जाने जाते हैं। इन वाक्यों में जनता के अनुभव का निचोड़ या सार होता है। इनकी उत्पत्ति एवं रचनाकार ज्ञात नहीं होते।

लोकोक्तियाँ आम जनमानस द्वारा स्थानीय बोलियों में हर दिन की परिस्थितियों एवं संदर्भों से उपजे वैसे पद एवं वाक्य होते हैं जो किसी खास समूह, उम्र वर्ग या क्षेत्रीय दायरे में प्रयोग किया जाता है। इसमें स्थान विशेष के भूगोल, संस्कृति, भाषाओं का मिश्रण इत्यादि की झलक मिलती है। लोकोक्ति वाक्यांश न होकर अपने आप एक स्वतंत्र वाक्य होते हैं। जैसे- भागते भूत को लंगोटी भली ; आम के आम गुठलियों के दाम ; सौ सोनार की, एक लोहार की ; धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

लोकोक्ति और मुहावरों में अन्तर पाया जाता है। तथा मुहावरा पूर्णतः स्वतंत्र नहीं होता है, अकेले मुहावरे से वाक्य कभी पूरा नहीं होता है। लोकोक्ति पूरे वाक्य का निर्माण करने में समर्थ होती है। मुहावरा भाषा में चमत्कार उत्पन्न करता है जबकि लोकोक्ति उसमें स्थिरता लाती है। मुहावरा छोटा होता है जबकि लोकोक्ति बड़ी और भावपूर्ण होती है।

लोकोक्ति का वाक्य में ज्यों का त्यों उपयोग होता है। मुहावरे का उपयोग क्रिया के अनुसार बदल जाता है लेकिन लोकोक्ति का प्रयोग करते समय इसे बिना बदलाव के रखा जाता है। हाँ, कभी-कभी काल के अनुसार परिवर्तन सम्भव है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों एवं लोक विश्वास आदि पर आधारित चुटीला, सारगर्भित, सजीव, संक्षिप्त लोक प्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं जिनका प्रयोग बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य कथन आदि के लिए किया जाता है।"[19]

धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, "लोकोक्तियां ग्रामीण जनता की नीति शास्त्र है। यह मानवीय ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं।"[20]

डॉ. सत्येंद्र के अनुसार, "लोकोक्तियों में लय और तान या ताल न होकर संतुलित स्पंदनशीलता ही होती है।"[21]

लोकोक्ति का अर्थ है लोक में प्रचलित वह कथन अथवा उक्ति जो व्यापक लोक-अनुभव पर आधारित हो और लोकोक्ति में लौकिक- सामाजिक जीवन का अंश सत्य विद्यमान रहता है. लोकोक्ति में गागर में सागर जैसा भाव रहता है। लोकोक्ति कहने के लिए उचित प्रसंग की पहचान आवश्यक है।

लोकोक्ति= लोक+उक्ति।

लोग समाज में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति अथवा कहावत कहते हैं।

केवल वही उक्ति लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है. जिसमें जीवन का अनुभव को संक्षिप्त एवं लक्षण ढंग से अभिव्यक्त किया गया हो। लोकोक्ति में अनेक प्रकार के सत्य निहित होते हैं जो व्यावहारिक सत्य तथा जीवन यापन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। लोकोक्तियों का आधार कोई कहानी या चिरसत्य होता है। यह पूर्णवाक्य होते हैं। उनके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य पूर्ण, स्पष्ट तथा प्रभावशाली हो जाती है।लोकोक्ति में प्रयोग अधिक स्पष्ट हो जाता है।

मुहावरे का अर्थ:--

मुहावरा मूलत अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है बातचीत करना या उत्तर देना। कुछ लोग मुहावरे को 'रोज़मर्रा', 'बोलचाल', 'तर्ज़ेकलाम', या

'इस्तलाह' कहते हैं, किन्तु इनमें से कोई भी शब्द 'मुहावरे' का पूर्ण पर्यायवाची नहीं बन सका। संस्कृत वाङ्मय में मुहावरा का समानार्थक कोई शब्द नहीं पाया जाता। कुछ लोग इसके लिए 'प्रयुक्तता', 'वाग्रीति', 'वाग्धारा' अथवा 'भाषा-सम्प्रदाय' का प्रयोग करते हैं। वी०एस० आप्टे ने अपने 'इंगलिश-संस्कृत कोश' में मुहावरे के पर्यायवाची शब्दों में 'वाक्-पद्धति', 'वाक् रीति', 'वाक्-व्यवहार' और 'विशिष्ट स्वरूप' को लिखा है। पराड़कर जी ने 'वाक्-सम्प्रदाय' को मुहावरे का पर्यायवाची माना है। काका कालेलकर ने 'वाक्-प्रचार' को 'मुहावरे' के लिए 'रूढ़ि' शब्द का सुझाव दिया है। यूनानी भाषा में 'मुहावरे' को 'ईडियोमा', फ्रेंच में 'इंडियाटिस्मी' और अंग्रेजी में 'ईडिअम' कहते हैं।

"मोटे तौर पर जिस सुगठित शब्द-समूह से लक्षणाजन्य और कभी-कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है उसे मुहावरा कहते हैं।"[22] कई बार यह व्यंग्यात्मक भी होते हैं। मुहावरे भाषा को सुदृढ़, गतिशील और रुचिकर बनाते हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में अद्भुत चित्रमयता आती है। मुहावरों के बिना भाषा निस्तेज, नीरस और निष्प्राण हो जाती है। मुहावरे रोजमर्रा के काम के है।

<u>मुहावरे की परिभाषा:--</u>

विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से 'मुहावरे' की परिभाषा की है जिनमें से कुछेक यहाँ दी जा रही हैं:

डॉ॰ उदय नारायण तिवारी ने लिखा है- "हिन्दी-उर्दू में लक्षण अथवा व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य को ही 'मुहावरा' कहते हैं।"[23]

'मुहावरा' की सबसे अधिक व्यापक तथा सन्तोषजनक परिभाषा डॉ॰ ओमप्रकाश गुप्त ने निम्न शब्दों में दी है :

"प्रायः शारीरिक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों और कहावतों अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुकरण या आधार पर निर्मित और अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाले किसी भाषा के गठे हुए रूढ़ वाक्य, वाक्यांश या शब्द-समूह को मुहावरा कहते हैं।"[24]

मुहावरे भाषा की नींव के पत्थर कहे जाते हैं जिस पर उसका भव्य भवन आज तक रुका हुआ है और मुहावरे ही उसकी टूट-फूट को ठीक करते हुए गर्मी, सर्दी और बरसात के प्रकोप से अब तक उसकी रक्षा करते हुए चले आ रहे हैं। मुहावरे भाषा को सुदृढ़, गतिशील और रुचिकर बनाते हैं। उनके प्रयोग से भाषा में चित्रमयता आती है जैसे-अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना, दाँतों तले

उँगली दबाना, रंगा सियार होना, चेहरा लाल नीला पीला होना - ईर्ष्या व जलन के भाव से दूसरे के कार्य या फिर उस व्यक्ति को नापसंद करना या क्रोध करना। चेहरा लाल पीला होना - क्रोधित होना (सामान्य/प्राकृतिक स्तिथि) आदि।

प्रतीक:-

प्रतीक सामान्यतया चिह्न को कहा जाता हैं। जब कविता में कोई वस्तु इस तरह प्रयोग की जाती है कि वह किसी दूसरी वस्तु की व्यंजना या संकेत करे तब उसे हम प्रतीक कहते हैं।

बिम्ब में संवेदना अपने तात्कालिक रूप में होती है। लेकिन प्रतीक में संवेदना, तात्कालिक रूप को पूरा लाँघ जाती है। बिम्ब जिस वस्तु, दृश्य या व्यापार का होगा। वह उसी के आंतरिक बाह्य स्वरूप के सघन और गतिशील रूप का उद्घाटन करता रहेगा। जैसे ऊपर के उद्धरणों में दृश्य, रंग, गंध आदि के अनुभवों को ही गहराई और सजीवता से व्यक्त किया गया है लेकिन प्रतीक प्रस्तुत वस्तु से अधिक और भिन्न किसी और बात की ओर संकेत करता है।

काव्य में चिंतन का बहुत बड़ा महत्व है। प्रतीक का संबंध भी मनुष्य की चिंतन प्रणाली से ही है । प्रतीक का शाब्दिक अर्थ अवयव या चिह्न होता है । कविता में प्रतीक हमारी भाव सत्ता को प्रकट अथवा गोपन करने का माध्यम है। प्रत्येक भाव व्यंजना की विशिष्ट प्रणाली है। इससे सूक्ष्म अर्थ व्यंजित होता है । डॉक्टर भगीरथ मिश्र कहते हैं कि *" सादृश्य के अभेदत्व का घनीभूत रूप ही प्रतीक है।"*[25] उनके मंतव्य में प्रतीक की सृष्टि अप्रस्तुत बिंब द्वारा ही संभव है ।
प्रतीक के कुछ मौलिक गुण धर्म है जैसे **सांकेतिकता, संक्षिप्तता, रहस्यात्मकता,बौद्धिकता, भावप्रकाश्यता** एवं प्रत्यक्षतः प्रतिज्ञा प्रगटीकरण से बचाव आदि आधुनिक कविता प्रतीक के वक्त सामान्य लक्षण को अपने अंदर समाहित कर पाठक को विषय को समझने अनुभव करने और अर्थ में संबोधन का व्यापक विकल्प प्रस्तुत करती है।
आज कविता **कबीर, सूर, तुलसी,** की भांति निश्चित अर्थों में बिल्कुल भी बांधती नहीं है बल्कि उसे उसकी भाव सत्ता के सोचने समझने की खुली छूट देती है और इसमें प्रतीकों का बहुत बड़ा योगदान परिलक्षित होता है।

बिम्ब:–

कविता की व्याख्या और सराहना करने के लिए बिम्ब और प्रतीक का व्यवहार करना आधुनिक युग के आलोचकों ने अपनी रचनाओं में शुरू किया। अब आजकल अलंकारों की अपेक्षा कविता में बिम्ब और प्रतीक के

प्रयोग को समझना अधिक जरूरी लगता है। आधुनिक युग का कवि सचेत रूप से अपनी कविता को अलंकारों से बहुत ही सुंदर रुप में सजाना नहीं चाहता। दूसरे शब्दों में कहें तो वह कविता को सजाने से ज्यादा अनुभव को सजीव और जटिल रूप में दर्शाना चाहता है। सुन्दरता की अपेक्षा अनुभव की बनावट और जीवंतता आधुनिक कवि के लिए ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

किन्तु ऐसा नहीं है कि पुराने कवि अनुभव की सजीवता और जटिलता, कविता की व्याख्या करते समय अलंकारों का उल्लेख करके कविता की सुंदरता पर अधिक ध्यान देते थे। आधुनिक युग के पाठक और आलोचक कविता की सजीवता को अधिक मान्यता प्रदान करते है मोटे रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक कवि का दृष्टिकोण सौन्दर्यवादी की अपेक्षा जीवनवादी अधिक हो गया है। यही कारण है कि कविता में बिम्ब का महत्त्व बहुत बढ़ गया है।

ऐसा माना जाता है कि अक्सर बिम्ब संवेदन से जुड़े होते हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता 'ऐन्द्रियता' होती है। यही वजह है कि सुंदरता से अधिक सजीवता बिम्ब का प्रधान गुण है। अलंकार में सजीवता हो सकती है लेकिन उनके प्रयोग का प्रधान उद्देश्य कविता में सौन्दर्य लाना ही होता है। ठीक उसी प्रकार बिम्ब में सौन्दर्य हो सकता है, लेकिन उसका काम कविता को सजीव बनाना है।

कविता में जब कवि कल्पना के प्रयोग से बिम्ब की सृष्टि करता है तब वह अपने अनुभव को ठीक उसी रूप में व्यक्त करना चाहता है जैसा वह खुद अनुभव करता है। लेकिन जब वह अलंकार का प्रयोग करता है तो उसे कुछ आडम्बर के साथ व्यक्त करना चाहता है। यानी बिम्ब के प्रयोग से कवि अपने अनुभव को प्रमाणिक करता है। उसकी असलियत की चिंता करता है। अलंकार के प्रयोग से अधिकतर प्रदर्शन की भावना प्रगट होती है।

<u>बिम्ब का अर्थ-</u>

बिम्ब अंग्रेजी शब्द इमेज (Image) का पर्यायवाची है। यह शब्द अपने आप में बड़ा व्यापक है। साधारणतः बिम्ब शब्द का प्रयोग छाया, प्रतिच्छायां, अनुकृति आदि के रूप में होता है। अंग्रेजी कोश में भी बिम्ब का किसी वस्तु की छाया, अनुकृति, सादृश्यता अथवा समानता माना गया है। बिम्ब शब्द का बड़ा व्यापक प्रयोग होता है। मनोविज्ञान, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में इसका विशेष महत्त्व है।

मनोविज्ञान में बिम्ब शब्द से मानसिक पुनर्निर्माण का अर्थ लिया जाता है। विश्व-कोश के अनुसार 'बिम्ब' चेतन स्मृतियाँ जो विचारों की मौलिक उत्तेजना के अभाव में इस विचार को सम्पूर्ण या आंशिक रूप में प्रस्तुत करती है।

आधुनिक कविता के अध्ययन में बिम्ब का प्रयोग आधुनिक है। आधुनिक मानव की वैज्ञानिक दृष्टि, अन्वेषण की प्रवृत्ति, निरन्तर जीवन और जगत् की गहन जटिलताओं को खोलने की प्रवृत्ति, बाह्य यथार्थ के प्रति भावात्मक प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति इन सब ने भ्रम, कल्पना के स्थान पर प्रत्यक्ष ठोस अनुभव को आधार बनाकर काव्य में बिम्बों की खोज शुरू की। अमेरिकी विचारक जोजेफाइन माइल्स के अनुसार, "बिम्ब सिद्धान्त का आरम्भ उस समय से मानना चाहिए जब लॉक और ह्यूम जैसे इन्द्रियानुभववादी दार्शनिक ने तर्क और अनुमान को अपेक्षा वस्तु की प्रत्यक्ष संवेदना को अधिक प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण सिद्ध किया। काव्य के क्षेत्र में मूर्त भावना के स्थान पर मूर्त ऐन्द्रिय-चित्रों अथवा बिम्ब-विधान का आग्रह इसी क्रान्तिकारी दार्शनिक स्थापना का परिणाम था।"[26]

बिम्ब का अर्थ :-

'बिम्ब' शब्द अँग्रेजी के इमेज़ (Image) शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाता है।

संस्कृत में बिम्ब शब्द का अर्थ :- प्रतिच्छवि, प्रतिच्छाया, प्रतिबिम्बित

"जिस प्रकार अंग्रेजी के अनेक पारिभाषिक शब्दों के लिए उन्होंने हिन्दी में नए पारिभाषिक शब्द गढ़े थे, उसी प्रकार "इमेज' के लिए 'बिम्ब शब्द की उद्भावना की थी। (डॉ. केदारनाथ सिंह ने आ. रामचंद्र शुक्ल के लिए कहा था)

अंग्रेजी के 'इमेज' शब्द के लिए हिन्दी में 'बिम्ब' का प्रयोग सर्वप्रथम आ. रामचंद्र शुक्ल ने किया।(डॉ. केदारनाथ सिंह के अनुसार)

बिम्ब की परिभाषा :-

(1.)आ.रामचंद्र शुक्ल के अनुसार,रस मीमांसा पुस्तक से "काव्य में अर्थ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है।"[27]

(2.) नगेंद्र के अनुसार "कल्पना की सहायता से शब्दार्थ द्वारा निर्मित ऐसे मानस चित्र को बिम्ब कहते हैं जिसमें भावतत्त्व का सम्मिश्रण हो।"[28]

(3.) भागीरथ मिश्र के अनुसार "वस्तु, भाव या विचार को कल्पना एवं मानसिक क्रिया के माध्यम से इन्द्रियगम्य बनाने वाला व्यापार ही बिम्ब विधान है।[29]

इस परिभाषा के अनुसार बिम्ब की विशेषता:-

★ बिम्ब एक प्रकार का शब्द चित्र है।

★ बिम्ब का निर्माण कल्पना के द्वारा होता है।

★ बिम्ब के निर्माण के लिए ऐन्द्रिय अनुभव के आधार का होना आवश्यक है।

डॉ. केदारनाथ सिंह के अनुसार "कवि जब मानव मन के सहज कृत्रिम, गतिशील, जटिल संवेगों का भाषा के जीवन्त माध्यम के द्वारा शाब्दिक पुनर्निर्माण करता है तो उसे समीक्षा की आधुनिक पदावली में बिम्ब-विधान कहते हैं।"[30]

<u>तत्सम एवं तद्भव शब्द:-</u>

तत्सम शब्द संस्कृत भाषा के दो शब्दों, तत् + सम् से मिलकर बना है। तत् का अर्थ है – उसके, तथा सम् का अर्थ है – समान। अर्थात – ज्यों का त्यों। जिन शब्दों को संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के ले लिया जाता है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। इनमें ध्वनि परिवर्तन नहीं होता है। हिन्दी, बांग्ला, कोंकणी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तेलुगू, कन्नड, मलयालम, सिंहली आदि में बहुत से शब्द संस्कृत से सीधे ले लिए गये हैं, क्योंकि इनमें से कई भाषाएँ संस्कृत से जन्मी हैं।

तत्सम शब्दों में समय और परिस्थितियों के कारण कुछ परिवर्तन होने से जो शब्द बने हैं उन्हें तद्भव कहा जाता है। तद्भव का शाब्दिक अर्थ है – उससे बने (तत् + भव = उससे उत्पन्न), अर्थात जो उससे (संस्कृत से) उत्पन्न हुए हैं। यहाँ पर तत् शब्द भी संस्कृत भाषा की ओर इंगित करता है। अर्थात जो संस्कृत से ही बने हैं। इन शब्दों की यात्रा संस्कृत से आरंभ होकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं के पड़ाव से होकर गुजरी है और आज तक चल रही है।

तत्सम दो शब्दों तत + सम से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है उसके समान अर्थात संस्कृत के समान। हिंदी में अनेक शब्द संस्कृत से सीधे आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं अर्थात जिन शब्दों को संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन अथवा बदलाव के उपयोग किया जाता है उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। इसमें ध्वनि परिवर्तन भी नहीं होता है।

सामान्यतः संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जिनमें मात्रा, वर्ण में आंशिक परिवर्तन होकर एक सरल रूप में हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं तो ऐसे शब्दों को तद्भव शब्द कहा जाता है।

उदाहरण के लिए सुन्दर पंखों वाले पक्षी के लिए 'मयूर ' शब्द का प्रयोग

संस्कृत में होता है किन्तु हिन्दी में इसी पक्षी के लिए 'मोर' शब्द का प्रयोग होता है। इस तरह 'मयूर' संस्कृत का शब्द है और जब इस शब्द का प्रयोग हिन्दी में ज्यों का त्यों होता है तो इसे 'तत्सम' शब्द कहते हैं। किन्तु 'मयूर' शब्द में 'म' में 'ओ' (ो) की मात्रा लगाकर एवं 'यू' को हटाकर आंशिक परिवर्तन करके 'मोर' शब्द का प्रयोग यहाँ नए रूप में प्रयुक्त हुआ है इसलिए 'मोर' शब्द तद्भव है।

उदाहरणतया हिन्दी में दियासलाई शब्द मिलता है। भाषा के पंडित जानते हैं कि यह शब्द संस्कृत के “दीपशलाका” से व्युत्पन्न हुआ है। इसी तरह हिन्दी का नारंगी शब्द संस्कृत के “नागरंगिका” शब्द से निर्मित हुआ है। संस्कृत में “नाग” शब्द का एक अर्थ “केसर” भी होता है। इस तरह “नागरंगिका” का अर्थ है – केसरी रंगवाली। बहरहाल बात हम तद्भव शब्दों की कर रहे है। हमारी भाषा में लगभग साठ सत्तर प्रतिशत शब्द “तद्भव” है।

तद्भव शब्द का विश्लेषण (शाब्दिक अर्थ) - 'तद्भव' शब्द दो शब्दों के संयोजन से बना है - तत् + भव । जहाँ 'तत्' का अर्थ है 'उससे' एवं 'भव' का अर्थ है 'उत्पन्न' । इस प्रकार तद्भव शब्द का अर्थ होगा - 'उससे (संस्कृत से) उत्पन्न' अर्थात ऐसे शब्द जो संस्कृत शब्दों से उत्पन्न हुए हैं उन्हें 'तद्भव' कहते हैं।

दूसरे शब्दों में कहे तो ऐसे शब्द जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर (बिगड़कर) हिन्दी में आये हैं वे तद्भव कहलाते हैं। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए, हिन्दी में आये हैं। सभी तद्भव शब्द संस्कृत से आये हैं, परन्तु देशकाल के प्रभाव से विकृत (बिगड़) हो गये हैं, जिससे उनके मूल रूप का पता नहीं चलता।

अधिकांश भाषाविद तद्भव शब्दों को ही हिन्दी के वास्तविक तथा सच्चे शब्द मानते हैं। अतः हिन्दी की मूल प्रकृति तद्भवपरक है। कई भाषाविद् तद्भव शब्दों को 'हिन्दी का मेरुदण्ड' कहते हैं। भाषाविद् रामचन्द्र वर्मा का मानना है कि हिन्दी भाषा हज़ारों तद्भव शब्दों से भरी है। वास्तव में तद्भव शब्द ही हमारी अपनी असली पूँजी हैं। सभी क्रियाएँ, सभी सर्वनाम, बहुत-सी संज्ञाएँ, विशेषण और क्रिया विशेषण तद्भव-रूप में ही हैं

देशज शब्द:-

वे शब्द जो स्थानीय भाषा के शब्द होते है, ये देश की विभिन्न बोलियों से लिए जाते है, अर्थात् तत्सम् शब्द को छोड़ कर, देश की विभिन्न बोलियों से आये शब्द देशज शब्द है। इन्हें आवश्यकता अनुसार प्रयोग किया जाता है और ये

बाद में प्रचलन में आकर हमारी भाषा का हिस्सा बन जाते हैं।
दूसरे शब्दों में – वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति की जानकारी नहीं है, बोल चाल के आधार पर स्वत: निर्मित हो जाते हैं, उसे देशज शब्द कहते हैं। इन्हें देशी शब्द भी कहा जाता है।

विदेशी शब्द:-
जो शब्द विदेशी भाषा के हैं, परंतु हिंदी में उन शब्दों का प्रचलन हो रहा है। ऐसे शब्द विदेशी शब्द कहे जाते हैं। विदेशी शब्द हिंदी भाषा में इस प्रकार घुल-मिल गये है कि उनको पहचानना मुश्किल है।
दूसरे शब्दों में – विदेशी भाषाओं से हिंदी में आये शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। इन विदेशी भाषाओं में मुख्यत: अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी व पुर्तगाली शामिल है।

–: भाषाशैली- :--

आत्मकथा की भाषा-शैली :–

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने आत्मकथा में बहुलता से ग्रामीण अंचल की भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग किया है तथा पात्रों की संख्या भी सीमित है जो लोकल या क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते है जो निम्न उदाहरणों में देखा जा सकता है। शोधार्थी ने बेचैन जी की आत्मकथा की भाषा शैली को संदर्भों के माध्यम से पुष्टि करते हुए व्यक्त किया है। जिससे हमारे शोध कार्य से उनकी आत्मकथा में व्याप्त भाषा शैली का हर्मे विस्तार से जानकारी प्राप्त होगी। जो कि निम्नलिखित हैं:--

वे रिरियानी भाषा में बोलते थे "लम्बरदार-, मैं लठिया पकरिवान कूँ लै आओ हूँ। मैं एकाद पूरी कम खाइ लिंगो, जोउ दुए पूरी खाइ जाइगो। तुम्हारे का कमी है? वैसे लम्बरदार जाकी खुराक भौत कम है।"[31]

प्रस्तुत उदाहरण में बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा को लिखने के लिए रिरयानी भाषा अर्थात् किसी चीज को बार-बार बोलकर उसे संबोधित करने वाली भाषा का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है। जो की कन्नौजी भाषा के पुट अपने आपमें लिए हुए है।

हालाँकि, इसी किताब में यह मिथ या कहावत दर्ज थी कि अंधे पृथ्वीराज चौहान ने अपने दरबारी मित्र कवि चन्दबरदाई द्वारा सांकेतिक भाषा में यह कहने पर कि--

"साठ हाथ बत्तीस गज,

अंगुल चौदह जान।

ता ऊपर सुलतान है,

मत चूके चौहान ।।

सुल्तान गौरी के मुँह में तीर मार दिया था।"[32]

यहां पर हम भाषा शैली के आधार पर यह दर्शाना चाहते हैं कि बेचैन जी ने अपनी रचना में मिथक तथा कहावतों का भी प्रयोग किया है। जिसमें अपनी एक अलग छवि हमें प्राप्त होती है।

आजादी का कोई आभास नहीं। फूलसिंह आज भी याद दिलाता है कि मैं किस तरह आल्हा छन्द बनाया करता था। एक व्यंग्यात्मक तुकबन्दी याद है-

"मरी मुसटिया नॉय जीवनभर, सिक्ख जी ताने फिरें किरपान । -

खून गरीबन को पीवत हैं, ये क्या हैं गुरुअन की सन्तान ॥

मेरी तुकबन्दी सुनी और फूलसिंह नाचने लगा- वाह ! सरदार को मैंने अपना कि-नाम सौराज बताया था और उन्होंने अपने वँधुआ मजदूरों के हिसाबताब की अपनी डायरी में मुझे 'स्वराजसिंह' दर्ज किया था। मैं उनमें सबसे छोटा बाल- मजदूर था।"[33]

यहां पर बेचैन जी ने व्यंग्यात्मक तुकबंदी का प्रयोग किया है जिसे हम अपने शोध में प्रस्तुत कर रहे हैं। बेचैन जी ने अपनी इस रचना में छंदों के साथ व्यंग को प्रस्तुत किया है। तथा अपनी शब्द शक्ति का बहुत ही सुंदर प्रदर्शन किया है।

"सरदार जी को वचन देकर मैं लघु नाटिका तैयार करने में जुट गया। तोड़ कर मैंने आखिरी क्षण उनके कहने से पहले ही नाटिका लिख कर सरदार को सौंप दी थी- 'शहीदों की सीख'। संवाद बच्चों को समझा दिये और भाषा का सहज सरल प्रवाह भी ठीकठाक कर दिया। यह मेरे लेखक जीवन - की पहली नाटिका थी, जिसे मैंने उतना गम्भीरता से सृजित नहीं किया था। यह तो कल्पनातीत था कि मेरा कोई साहित्यिक भविष्य भी होगा। भगत

सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत के बारे में जो पढ़ा था, वही नाटक के रूप में लिखने की कोशिश की थी, बल्कि 'डायर पर फायर' करके एक दृश्य उसमें ऊधम सिंह पर भी दिया था।"[34]

बेचैन जी ने उपर्युक्त पंक्तियों में भाषा का सरल सहज रूप प्रस्तुत किया है जिसमें बेचैन जी पाश्चात्य संस्कृति की शब्दावली का भी निरन्तर प्रयोग किया है। जिसके द्वारा हमने बेचैन जी की भाषा को जांचा तथा परखा भी है। अन्योक्ति में वह गीत कुछ इस प्रकार की शक्ल अख्तियार करता था-

"टूटी डाल झरी सब पतियाँ,

डाल भई लाचार,

विधाता ने कैसी विपदा डारी रे!

माँगत फूल हवा और पानी,

रूतु निरमोहिन ने का ठानी?

कातें कहें कौन दुख बांटे,

कौन करे रखवारी रे!

बेवक्त गुजर गया माली... रे!....

किल्ला नये वक्त के मारे,

आँधी लू ने निबल करि डारे,

का खाएँ का पिएँ बेचारे,

ऐसे कैसें जिएं बेचारे

नंगे सिर पै वरसी ज्वाला

घर आयी कंगाली रे।

बेवक्त गुजर गया माली रे!

उठ गयी पैंठ, लदे व्यापारी

सुटि गयी, बिक

गयी रौनक सारी

शबद शेष सन्देस रह गये

खुद अपने दुखदर्द मिटाना -

खुद करना रखवाली रे।

बेवक्त गुजर गया माली रे!"[35]

इन पंक्तियों में हम देखें तो बेचैन जी ने अन्योक्ति का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है और साथ ही भाषा का लयात्मक रूप व्यक्त किया है जिसके कारण उनकी रचना बहुत ही आकर्षक प्रतीत होती है।

"दूसरी ओर मेरा स्कूल छूटने के कुछ दिन बाद रूपसिंह को पुनः स्कूल भेजा जाने लगा था। परन्तु वह बार- बार फेल होता रहा था। "भट्ठा पर ईटें पाथने मायासौराज संग -वह काहे नाँय जाइ रयौ" अम्माँ ने भिकारी से सवाल किया था। आगे पुनः उन्होंने कहा "घर में कंगाली है और बालकों की कमाई से ही - वह दूर होनी है, तो सौराज और माया ही काहे काम करें? हम सब भट्टा पै क्यों नाँय चलै? पर भिकारी पूरा तानाशाह था। उसने जो फैसला कर लिया सो कर लिया। वह हर इतवार रामघाट गंगा- स्नान करने जाता था, किन्तु कथित धार्मिक उपक्रम करने के बाद भी उसने अपनी बुरी आदतों, गंदी जुबान और दुर्व्यवहार में कोई कमी नहीं की। अम्माँ व्यंग्य में प्रायः कहती थी- "तोइ जैसे मगरमच्छ कूँ जरूर सुरग देगी गंगा मइया?"[36]

लेखक ने उपर्युक्त पंक्तियों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है जिसमें अम्माँ व्यंग्य करती हुई गंगा मैया से संवाद करती हुई प्रतीत हो रही है। जिसमें हमें व्यंग्य शैली का आभास होता है। आज भी गावों में भूत प्रेतों के लिए सामूहिक रूप से भूत के लिए गान -(छंद) होता। एक बानगी देखिए

"आवन- आवन कह गये रन छतरी रे

तोइ बीते बारह मास सूरमा जुल्मै रे ।

अरे रन छतरी माँ तेरी बरजै,

बहन तेरी बरजै, बहन तेरी बरजै रे।

तू रन जूझन मत जाइ भाई रे॥

अरे सूरिमाधरती चले न आकाश चले न आका-शै रे।

तेरी मंझ लोक में गैल भाई रे ॥

(अरे सूरमा तू न तो धरती पर चलता है और न आकाश में चलता है

तेरा रास्ता मध्य लोक में है ।)

अरे सूरमा घुर बंगाले से गुरे हैं लंगड़े, घुरे हैं लंगाड़े रे।

कोई पश्चिम वरसन हार सूरमा गजवै रे।"[37]

प्रस्तुत पंक्तियों में रचनाकार की छन्दात्मक शैली का अनुभव हमें प्राप्त होता है। जहां रचनाकार ने छंद के माध्यम से एक गीत प्रस्तुत किया है जिसमें सूरमा (देवता) को संबोधित करते हुए छंद को रचा है।

"इन्हें दिल्ली, अलीगढ़ या लखनऊ कहीं बड़ी जगह दिखाओ। बीमारी गम्भीर है। भूतों - पिशाचों के चक्कर में रह कर इन्हें घर बैठे मत मारो।" बात माँ की समझ में आ गयी। संयोग से तब तक मौसेरे भाई डॉ. नत्थूलाल की चिट्ठी भी आ गयी। नत्थूलाल उन दिनों मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, दिल्ली में एम.बी.बी.एस. का कोर्स पूरा कर इर्विन जॉब करते थे। यह उनका शायद -हॉस्पिटल (एल.एन.जे.पी.) में हाउस अन्तिम साल था।"[38]

प्रस्तुत पंक्तियों में हमने लेखक की संक्षेपाक्षर शैली को उकेरा है जिसमें लेखक ने संक्षेपाक्षरो को बहुत ही आकर्षक रुप से प्रदर्शित किया है। जिससे लेखक की एक नई भाषा शैली से हम अवगत हो जाते हैं।

उन दिनों मैं दोढाई रुपये प्रतिदिन कमाने लगा था। यह काम मुझे अच्छा लग - रहा था, क्योंकि इसमें एक तो शरीर थकता कम थातिक -, दूसरा कोई तिक कर हाँकने वाला नहीं होता था। अपनी मर्जी और अपने अनुशासन से काम करना होता था। कुल आठनौ घण्टा काम कर दोपहर के बाद -मैं खाली हो जाता था। नीबू बेचने की फेरी में ही मेरी पहली तुकबंद कविता का जन्म

हुआ था। वे शब्द मुझे आज भी स्मरण हैं-

"रस के भरे, रसीले नीबू, दस के दो, पन्द्रह के दो।

हँस के लो भाई, हँस के लो ॥

लयात्मक हाँक लगाता हुआ मैं महीनों राजौरी गार्डन के आलीशान भवनों के दरवाजों पर दस्तक देता रहा, खूबसूरत गलियों में घूमता रहा। आगे चल कर जब मैं लोक शैली में भी तुकबंदियाँ करने लगा और छोटामोटा कवि बन गया, - तो मैंने अपनी पृष्ठभूमि में काम के साथ श्रम की परम्परा में जन्मी उस तुकबंदी को अपनी कविता का बीज माना। दूसरों से अच्छी बातें सीखना, लोगों से प्रभावित होने और प्रभावित करने की प्रक्रिया मेरे व्यक्तित्व का निर्माण करती रही। मैं स्कूल में नहीं था-न-रूपी स्कूल से कुछ-, परन्तु समाज कुछ निरन्तर सीख रहा था। मेरा हृदय तटस्थ व निरपेक्ष नहीं रह सका। सहृदयता मुझे किसी की ओर ले जाती थी और किसी की ओर से हटा भी देती थी। आसक्तिअवगुण आज भी कारगर -विरक्ति मेरे व्यक्तित्व के दो गुण- हैं।"[39]

लेखक इन पंक्तियों में लयात्मकता का प्रयोग करते हुए तुकबंदी का बहुत ही सुंदर रुप इन पंक्तियोँ के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसको पढ़ते हुए तुकबंदी का एक अलग स्तर हमें दिखई पड़ता है।

"नाई की दुकान पर से शीशा उठा कर शर्मा जी ने व्यंग्य में कहा "-सौराज, लै बाबू कूँ शीशा तो दै दै। " अन्धे आदमी को दर्पन के क्या मायने? तब मैंने ताऊ -का गाया गीत दोहराया

मुखड़ा का देखे दर्पन में....

तेरे दयाधरम नहीं मन में। -

इतना कहना था कि शर्मा जी आपे से बाहर आ गये थे।"[40]

बेचैन जी की प्रस्तुत पंक्तियों में शर्मा जी द्वारा किए गए व्यंग्य को दर्शाया गया है जिसमें हमें व्यंग्यात्मक शैली का हमें बोध होता है। शर्मा जी व्यंग्य करते हुए कहते हैं की की ले सौराज अंधे को शीशा दे दे अंधे के लिए शीशा एक व्यर्थ वस्तु है। जिसमें शर्मा जी का व्यंग्य हमें साफ़ नज़र आता है।

"बेटा ही नॉय-मैंने तो केला (बेटी) हूँ पढ़ाई। अब इन सबके बालक पब्लिक स्कूलनु में पढ़ि रए हैं। पैसा है तो बड़ेबड़े गैर रंगइया, फर-इया जाटव शादी करि गये हैं। ओमी के ससुर दिल्ली में अफसर हैं। सब गैर चामकाम बा-रे हैं और जिनने काम छोडौ हैं, उनके बालक अनपढ़ रह गये। वे हमारे यहाँ काम माँगत हैं, पर इतने अमीर तो हमउ हत नाँएँ जो सब कूँ काम दे सकें। मेरे मानस में तुकबंदी कौंधती है-

टाटा कहाँ लुहार है, बाटा कहाँ चमार

चामकाम के नाम पर, घृणा हर्मे रही मार॥"-[41]

लेखक इन पंक्तियों में लयात्मकता का प्रयोग करते हुए तुकबंदी का बहुत ही सुंदर रुप इन पंक्तियोँ के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसको पढ़ते हुए तुकबंदी का एक अलग स्तर हर्मे दिखलाई पड़ता है।

"मैं ईंटगिलाया -ढो रहा था और काम के साथसाथ अपना एक मौलिक गीत - भी गुनगुना रहा था। वह गीत उस वक्त की एक ताजा तुकबन्दी थी-

चलो स्कूल करें तैयार,

पढ़ेंलिखें हो जा-वें हुशियार।

गाँव को और बड़ो होइ नाम,

करो भाई सब मिलजुल के काम॥-"[42]

लेखक इन उपर्युक्त पंक्तियों में लयात्मकता का प्रयोग करते हुए तुकबंदी का बहुत ही सुंदर रुप इन पंक्तियोँ के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसको पढ़ते हुए तुकबंदी का एक अलग स्तर हर्मे दिखलाई पड़ता है।

"गाँव रिश्ते से वो मेरी भाभी लगती थीं। मैंने इसी घटना को तुकबन्दी में बाँध कर सुनाया था। यहाँ एक अंश दे रहा हूँ-

सभा में बैठे हैं अच्छे,

बेच कर पत्नी के लच्छे।

पिता ऐसे मन के कच्चे,

भला क्या सीखेंगे बच्चे?"[43]

लेखक उपर्युक्त पंक्तियों में लयात्मकता का प्रयोग करते हुए तुकबंदी का बहुत ही सुंदर चित्रण इन पंक्तियोँ के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसको पढ़ते हुए तुकबंदी का एक अलग रूप हमें दिखलाई पड़ता है।

कहानी की भाषा:–

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने कहानी में सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है जिससे कहानी को पढ़कर पाठक वर्ग सहज ही समझ लेता है। यह भाषा की सरलता कही जा सकती है।

"बच्चू स्वयं भी संगीत प्रिय स्वभाव का किशोर था। हालाँकि न उसके पास वाद्ययन्त्र थे, और न कोई प्रशिक्षण। पर प्रकृतिकदत्त कला अवश्य थी, जो उसके कण्ठ से अक्सर फूटती रहती थी। उसी तरह 'लाडो' गाती थी। चन्दा से बतियाती थी, तारों को पास बुलाती थी। पर घूँघट नहीं उठाती थी। पढ़ने-लिखने के अन्तराल में तितली-सी उड़ जाती थी। स्कूल में वह दसवीं में ही गायन प्रतियोगिता जीती थी। यह उसकी पर्सनैलिटी का सच बच्चू के सपने में कैसे आया? वह सोच ही रहा था कि उसी क्षण बस के आगे ट्रक आ गया। चालक ने ज़ोर से ब्रेक मारी, कई यात्रियों के सिर सामने की सीटों से टकराये। एक यात्री गाली देता हुआ चिल्लाया। तेरी... साले ड्राइविंग कर रहा है या कुटाई कर रहा है। हरिद्वार पहुँचायेगा या सीधा स्वर्गधाम? बच्चू ने झटका क्या खाया कि सपने वाला ख़ज़ाना ही गँवा दिया। वह भड़भड़ा कर उठा और सावधान हो कर सीट पर बैठ गया। 'अब हम हरिद्वार पहुँच रहे हैं। परिचालक ने प्रसन्नता के स्वर में समाचार दिया।"[44]

बेचैन जी की कहानियाँअपने स्थान पर एक अलग ही सोच और आकर्षण को अपने आपमें संजोए हुए हैं उपर्युक्त पंक्तियां उनके कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'घूंघट हटा था क्या?' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है।

"न्याय! मुझे तो नहीं लगता कि कोई न्याय करता है ऊपरवाला, स्त्री और पुरुष की देह रचना में ही स्त्री को मार कर रख दिया है ऊपरवाले ने। सारी

लोकलाज, कुल-खानदान की मान-प्रतिष्ठा स्त्री के ज़िम्मे है। सारी गालियाँ स्त्री के अंगों को लेकर हैं। अपहरण और बलात्कार जैसे अपराध स्त्री के हिस्से ही आते हैं और तुम समझती हो कि बनाने वाले ने स्त्री को कुछ विशेष बना दिया है।" कीर्ति के कथन से सहमत होते हुए बीना बोली कि इसमें क्या शक है कि स्त्री सृष्टि में श्रेष्ठ है। पर कीर्ति का तर्क जारी था। "शादी करके स्त्री-पुरुष दोनों साथ-साथ रहते हैं। विशेष सम्बन्धों में भी दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हैं, परन्तु साल-दो साल में ही पहिए पटरी से उतरने लगें तब गाड़ी को रोक देना ही समझदारी होती है। ऐसे में पुरुष का तो कुछ नहीं बिगड़ता, वह हाथ झाड़कर बेदाग बना, दूसरी गाड़ी में सवार हो सफ़र पर निकल पड़ता है। यानी दूसरी शादी के मंडप में जाकर खड़ा हो जाता है और स्त्री बेचारी आधी भी नहीं रह जाती। इस बीच यदि कहीं माँ बन गई तो उसके बाद तो उसे गौरव मिलने के बजाय, गर्दिशें घेर लेती हैं। और यदि ज़िन्दगी की गाड़ी फिर से आरम्भ करे तो पुनर्विवाह के रास्ते में उसका लख्ते जिगर उसका बच्चा ही सबसे बड़ी रुकावट बनता है। बच्चे की वजह से उसकी माँ को कोई स्वीकार नहीं करता और यदि स्त्री को बच्चा न हो, वह बांझ निकल आए तो उसे कोई रद्दी अखबार के भाव भी नहीं पूछता, कुल मिलाकर आशय यह कि कुदरत ने औरत में हज़ार खूबियाँ बख्शी हों, पर मर्दों की व्यवस्था ने उसे दो कौड़ी का नहीं समझा है।" कीर्ति ने मानो अनुभव की बात कही हो। बीना ने एकाग्रता से उसकी पूरी बात सुनी और व्यग्र भाव से पूछा- ऐसा क्या हो गया तेरे साथ ? जो तू पुरुष मात्र को स्त्री विरोधी मान बैठी है?"[45]

यहां बेचैन जी ने अपनी कहानियों में समाज की वास्तविक समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट किया है ही हैं उपर्युक्त पंक्तियां उनके कहानी संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियाँ' की कहानी 'बस इत्ती सी बात' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है। तथा लेखक के जन्म स्थान की भाषा के गुण यहां दिखलाई देते हैं।

"शाम को देर तक किताबों में गढ़े रहने के बाद उसने सोचा, "क्यों न कॉलोनी की सड़कों पर एक दो घंटे साइकिल चला ली जाए। नेकर, बनियान और जूते पहन कर साइकिल के पैडल मारता हुआ वह सैक्टर एक को पार कर हिंडन नदी की ओर निकल गया। डेढ़-दो कि.मी. बाद ही नदी का सुनसान इलाका

आ गया था। उधर रेलवे लाइन के साथ सैक्टर 2 ए में कम आय वर्ग के मकान बनने आरम्भ हो रहे थे और झील से ठहरे पानी के किनारे 'डिग्री कॉलेज के लिए आरक्षित भूमि' का बोर्ड लगा हुआ था। दूसरी ओर निजी अस्पताल और निजी स्कूलों के लिए जमीनें छूटी हुई थीं। हिंडन की ओर 'मोहन मेकैन' के प्रदूषित पानी के निकास ने नदी के पानी की स्वच्छतापूर्ण मौलिकता समाप्त कर दी थी और जल की तासीर बदल कर वर्ण चेतना वाली राजनीति जैसी विषाक्त बना दी थी। यहाँ जल जीवन नहीं मौत का पर्याय बन गया था। ऊपर से चिमनियों से निकलते विषैले धुआं ने वातावरण पूरी तरह प्रदूषित कर दिया था। इस इलाके के कई बाशिंदे इस फैक्ट्री के धुएँ से डर कर चले गए थे। रविराज ने नदी की ओर बढ़ते हुए अचानक धवल वस्त्र धारण किए एक लम्बे कद की सुन्दर सुडौल युवती-सी परछाई देखी। शुरू में वह हिंडन के इर्द-गिर्द मंडरा रही थी। उसके बाद वह रेल की पटरी पर जाती दिखाई दी।"[46]

श्यौराज सिंह बेचैन की कहानियाँअपने स्थान पर एक अलग ही सोच और आकर्षण को अपने आपने संजोए हुए हैं उपर्युक्त पंक्तियां उनके कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' की कहानी 'क्या करे लड़की' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल सहज एवं बोल चाल की भाषा का प्रयोग किया है।

"क्यों हिम्मत न होने की इसमें क्या बात थी? हाँ तुमने सोचा होगा कि ऐसे केस में वह शायद तैयार न हों? पर सारा वाकया सच-सच बता कर परीक्षा तो लेतीं उसके प्रेम की। मृत्यु पथ पर दौड़ने की क्या जल्दी थी? वह तो हमेशा खुला है, जब चाहो उतर जाओ उस पर।"[47]

यहां लेखक की कहानियाँ सहज और सरल सोच और आकर्षण को अपने आपमें संजोए हुए हैं प्रस्तुत पंक्तियां इनके कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' की कहानी क्या करे लड़की से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल सपाट एवं बोल चाल की भाषा एवं मनोवैज्ञानिक भाषा का प्रयोग किया है।

"श्यामा कभी कीर्ति का मुँह देखती तो कभी रविराज का और कभी व्यस्त हो जाती अपनी रसोई और बच्चों के काम में। अब तक उसे डर था कि कहीं इस गोरी चमड़ी और संतरे से गालों वाली पर पिघल तो नहीं गए हज़रत। मर्दजात का क्या भरोसा? कब आवारा उमड़ती नदी में दिल खोल कर चौड़े हो जाएँ,

किनारे बन कर। कुत्ते, भैंसे, सुअर के लिए तो कुदरती मौसम तय होते हैं और मर्द कौम बारह महीने...।"[48]

यहां बेचैन जी की कहानियाँ अपने प्रसंग या वातावरण के साथ बदलती रहती है उपर्युक्त पंक्तियां उनके कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' की कहानी क्या करे लड़की से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग लेखक ने किया है।

"दिन चढ़ रहा था, धूप बढ़ रही थी और सामने से चंदन बढ़ रहा था, अपने घर की ओर। उसे लग रहा था मानो उसके पांव पीछे खिसकते जा रहे हैं। असल में उसका मन उसके लाडले बेटे में छूट गया था। उसका बस चलता तो बेटे को स्वस्थ करा कर तुरंत अपने घर ले जाता। पर घर तो उसके भीतर था। वह जानता था कि वहाँ भी पैसों का कोई इंतजाम नहीं है। जमीन तो सूरज के दाखिले में ही बेची जा चुकी है। कर्ज उधार की गंगा-यमुना का पानी नांक तक पहुँच गया है। डूबने को बच्चा है तो केवल कच्ची दीवारों वाला पुश्तैनी घर ।"[49]

यहां बेचैन की कहानियाँ अपने प्रसंग एवं परिस्थिति के भावानुकूल पत्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत पंक्तियां उनके कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' की कहानी क्या करे लड़की से ली गई हैं ।

"हाँ, ऐसासु है, करनी कछु। और कथनी कछु तुम ही सोचो भैन जी तौ तुम्हारी हैं, मेरी नांय, जो कछु करि रई हैं सो या तो तुम्हारे तांई और अपने खाते-पीते सबरन समाज के भैइयनु कूँ। हम अछूत औरत जात कूँ तो दुए आखर हूँ नायं दिलाय पायीं, वैसे तुम सोचो भैन तुम्हारी हैं या वे सहोदर जोशी जी की? राखी तुम्हारी कलाई में बाँधी या जोशी जी की और पण्डन जी की कलाई में, हाँ मैं तो इतनों जानति हूँ कि गरीब की कोई भैन-फेनि नांय होति। अमीर को सौ बहनें राखी बांधे हैं। आजकल बहनें शैद की मक्खी की तरह उसी भाई के घर चक्कर लगावें हैं जिस भाई से कछु लाभ मिल सके, यानी दान-दक्षिणा। कार में बैठि के आवें तौ आस-पास रौब जमि जाइ...वह बोले जा रही थी।"[50]

प्रस्तुत पंक्तियां इनके कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' की कहानी भरोसे की बहन से ली गई हैं। अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का प्रयोग किया है। यहां बेचैन जी पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है जिससे पाठक

वर्ग स्वयं को जोड़ लेता है।

मैं सवाल करता हूँ "आपको किसने नहीं पढ़ने दिया? क्यों नहीं पढ़ने दिया? हरपाल के चाचा कृपाराम जाट ने नहीं पढ़ने दिया। "क्योंकि मैं कृपाराम के खेत पर काम नहीं करना चाहता था 'न्यार' काटने कुट्टी काट के उन दिनों हमारे शरीर पर पूरे कपड़े तक नहीं होते थे जबकि हम हाड़ तोड़ मेहनत करते थे। मुझे स्कूल जाने से रोकते हुए खुशकी "मैं तुझे -(व्यंग्य) की थी कि नानकचंद के मदरसे में पढ़ाऊँगा।" मैं मन भर कर रह गया। उन दिनों हंसराम के दूर के मुँह बोले मामा अंग्रेज सेना से रिटायर्ड हो कर आए थे। वे हिन्दी और अंग्रेजी लिखना पढ़ना और बोलना जानते थे हम सब बस्ती के लोगों ने मिलकर उन्हें बुलाया और हम रात को छिपछिप कर पढ़ने लगे फिर भी - जमींदार को सूंघ लग ही गई। कि चमारों में पढ़ाई चल रही है तो मामा पर रात को चोरी कराने का झूठा इल्जाम लगाकर गाँव से जाने को मज़बूर कर दिया और हमारी पढ़ाई रुक गई, पर मैंने मन मार बन तय किया कि अपने बच्चों को पढ़ाऊँगा।"[51]

इस कहानी की रचना करते वक्त बेचैन जी ने रचनात्मक शैली का प्रयोग करने के साथ साथ व्यंगात्मक शैली का प्रयोग किया है जिसमें लेखक कृपाराम के ऊपर व्यंग्य करता हुआ प्रतीत होता है। शोधार्थी ने यहां लेखक की शैली को बहुत ही बारीकी से खोजने का प्रयास किया है।

"मेरे लिए दु:ख पहुँचाने वाली बात यह भी थी कि पाँच रुपये में पहुँचने वाले सादा पत्र पर अशोक ने पच्चीस रुपये के टिकट लगाये थे। आज फिर काग़ज़ उलटतेपलटते उसके बी.पी.एल. कार्ड संख्या 2118 की फ़ोटोप्रति मेरी - उँगलियों से टकरा गयी, जिसे वह बहुत कोशिशों के बाद पाकर 'अपनी 'पहचान की सनद' मिल गयी समझता था। सोचता था कि यह कार्ड देखकर मेरे देश के संकटमोचक लीडरान मेरे परिवार की ओर दौड़ पड़ेंगे। आख़िर अन्तिम साँस तक बी.पी.एल. कार्ड के प्रति ही तो आश्वस्त बना रहा अशोक। जमा उसकी विरासत यही एक कार्ड तो था-जोड़ और वह दिवास्वप्न वहाँ कवि के रूपक अलंकार से अधिक क्या था?"[52]

लेखक की कहानियाँअपने स्थान पर एक अलग ही सोच और आकर्षण को अपने आपने संजोए हुए हैं प्रस्तुत पंक्तियां इनके कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी कार्ड संख्या 2118 से ली गई हैं।

कविताओं की भाषा शैली

श्यौराज सिंह बेचैन की कविताओं में संगीतात्मकता एवं सपाट बयान बाजी जैसे शैली से बिल्कुल ओत- प्रोत की शैली का प्रयोग किया गया है जिसके कारण उसमें गेयता का गुण आ गया है।

नई फ़सल:–

"संग्रह की कविताओं का मुख्य स्वर व्यंग्य है और यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि इस विधा में कवि का हाथ काफी सधा हुआ है। संग्रह का आरम्भ 'श्रद्धांजलि" शीर्षक कविता से होता है और अन्त 'इन्तज़ार' से मुझे आरम्भ और अन्त का यह संयोजन एक रूपक की तरह जान पड़ा जिसमें अनजाने ही एक दूरगामी अर्थ की व्यंजकता आ गयी है। इन्हीं दो छोरों के बीच कवि का सारा भावलोक संचरित होता है और अक्सर बिना किसी बनाव- श्रृंगार के लगभग अनलंकृत। फिर व्यंग्य के लिए जो सच्ची मानवीय करुणा चाहिएतहाँ देखी -, उसकी बानगी भी इन कविताओं में जहाँ जा सकती है।

जहाँ तक कवि की भाषा का सवाल है उसमें एक सहज खुलापन है, जिसमें रचनात्मक सम्भावना अधिक है। मुझे जिस खास बात ने आश्वस्त किया, वह है कवि की वह क्षमता, जिसके चलते वह छन्दोबद्ध और लगभग छंदहीन दोनों प्रकार की कविताएँ लिखने में सफल है। जो छन्दोबद्ध कविताएं हैं, उनकी बनावट में भी खुलापन अधिक है और अनावश्यक कसाव कम। शायद नये यथार्थ की मांग भी यही है।"[53]

बेचैन जी की कविताओं की भाषा शैली बहुत ही सुंदर प्रतीत होती है इन्होंने अपनी कविताओं में छन्दहीन तथा छंदोबद्ध शैली का प्रयोग किया है जिसमें उनकी रचनात्मकता हमें दिखलाई देती है।

यद्यपि 'नई फसल' में कुछ लोकगीत और व्यंग्यात्मक कविताएँ भी शामिल हैं। जैसे-'जिन्दगी' (लोक मल्हार), 'साली' और 'टिकाऊ पति' किन्तु मुख्य रूप से कवि राजनीतिक बदलाव का कवि है। उसकी कविताएँ नये विश्व का निर्माण करना चाहती हैं जिसमें न रंगभेद हो, न लिंगभेद, न जातिभेद और न आर्थिक फलें और किसी के भी सपनों की हत्या न हो। कवि -विषमता। यहाँ सभी फूलें पांति और साम्प्रदायिकता की -ऐसी रहनुमाई नहीं चाहता है जो देश को जाति आग में झोंक देती है। 'नया जहाँ' कविता में कवि पूरी तरह आश्वस्त है कि देश के नौजवान नया जहाँ बनाएँगे और नई सुबह लेकर आएंगे। यथा-

"नौजवाँ नया जहाँ बनायेंगेबनायेंगे। -

जातपाँत का तनाव ।।-

ऊँचनीच, भेदभाव।-

पेट के सवाल का-

जो दे नहीं सके जवाब ।।

ऐसी रहनुमाई को हटायेंगे

नौजवाँ नया.....

पी गये थे आंसुओं के साथ रात ।

कह नहीं सके थे दिल की बात रात ।।

हम सुबह के वास्ते ही आये हैं।

हम सुबह ज़रूर लेके आएंगे।।[54]

यहां बेचैन जी ने लोक गीत तथा व्यंग्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया है जिसमें उन्होंने अपने स्तर पर इस कविता के माध्यम से ज़िंदगी के एक पहलू को व्यंग तथा लोक मल्हार के मध्यम से प्रस्तुत किया है।

'क्रौंच हूं मैं':–

"बन्द कर लो खिड़कियां,

देखो न बाहर की तरफ।

ऐसा करने से सड़क पर,

हादसे रुक जायेंगे।

तुम कबूतर की तरह

छिप जाओ आँखें बन्द कर

गिद्ध, बांजों के इरादे

हैं बदल ही जायेंगे।"[56]

प्रस्तुत पंक्तियों में बेचैन जी ने तुलनात्मक शैली का प्रयोग किया है जिसे उन्होंने तुलना करते हुए व्यंग्य के भावों को उनकी कविता 'क्रौंच हूं मैं' में प्रस्तुत किया है तथा छंदबद्ध एवं छंदमुक्त काव्य का बहुत ही आकर्षक रुप लिया है।

"कुर्सी को जिन्सजिन्स -दर-

कब्जाए चन्द घर हैं ।

तोंदें हैं जिनकी बोझिल

रोटी का फिक्र उनको ।

गाँधी लिबास में ये

'हाथी सफेद' समझो।"[57]

बेचैन जी ने अपने काव्य संग्रह 'नई फ़सल' की कविता हमें कोई गम नहीं है की इन पंक्तियों में लोकोक्ति 'हाथी सफेद समझो' का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जिसमें उनके काव्य का रूप अलग ही प्रतीत होता है।

--: लोकोक्तियां और मुहावरे--:

आत्मकथा में लोकोक्ति और मुहावरे:--

बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा में ग्रामीण परिवेश में पाए जाने वाले मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग स्थान-स्थान पर किया है जिससे आंचलिक परिवेश की झांकी मिलती है।

"मेरे जन्म के समय मेरा घरपरिवार कैसा था, उसका गुजारा कैसे होता था-, इन सवालों पर गौर करता हूँ तो थोड़ी हैरत और दहशत से भर जाता हूँ। इन तमाम सालों में दुनिया कहाँ-सेकहाँ पहुँच गयी।- हम अपने घरपरिवार के --साथ वहीं- के वहीं रह गये। आज भी स्थिति कमोबेश वैसी है, जैसी मेरे जन्म के समय थी। गाँव में आज भी मेरे घर में आसानी से रोटी नहीं जुटती है। रोजगार का कोई साधन नहीं है। गैर दलितों की तुलना में हालात बद से बदतर हो चुके हैं चमड़ा कमाने बनाने का धन्धा तो दशकों पहले बन्द ही हो गया था। डेढ़दो बीघे- पुश्तैनी जमीन के तीन टुकड़ों में से एक बचा है। भला मेरे इस सर्वस्वहीन चमार घर को क्यों कोई इज्जत दे ? और सवर्ण भी कौन हैं मेरे गाँव में? मेरा गाँव यादव बाहुल्य है। यहाँ अहीर सछूत शूद्र कहलाते हैं। वैसे तो चमार स्वयं को वाल्मीकि भाइयों से थोड़ा ऊपर समझते हैं, लेकिन दलितों में -चमार से ऊपर भी गैर चर्मकार जाटव और जाटवों से ऊपर गैर अहीर, बनिये, तेली आदि जातियों के लोग गाँव में रहते हैं। चूँकि मुस्लिम हिन्दू समाज के अंग नहीं हैं, इसलिए उनके साथ यादवों का व्यवहार बराबरी का होता है। 'पशुओं में गधा, 'पक्षियों में उल्लू' और 'जातियों में चमार' ये कहावतें हमारे प्रति सवर्णों की दलित विरोधी मानसिकता को उजागर करती हैं। यह एक दिन में तैयार नहीं हुई। ये ज़ख्म इतने गहरे हैं कि हम दर्द से तड़पने के बजाय सहन करने के अभ्यस्त हो गये हैं। सब कुछ स्वाभाविक लगता है। बर्दाश्तगी ही हमारी नियति बन गयी है। ये अपशब्द हमारे टोले के हर घर में लगातार सुनने को मिलते हैं। सवर्गों की जुबान पर चढ़े ये शब्द चमार कैसे बर्दाश्त करते रहे, यह आश्चर्यजनक है। दुनिया में कहीं मान-सम्मान और मनुष्य की गरिमा जैसी भी कोई वस्तु होती है, यह चमार नहीं जानते? इतना सीमित कर दिया गया उनकी बुद्धि विवेक का दायरा कि वे

अपने क्रान्तिकारी स्वरूप को पहचान ही नहीं पाए। गोया प्यार हो गया हो उन्हें इन कुशब्दों से। 'गधेराज चमार', -'चमार की औलाद', 'क्या चमार बार प्रयोग में-पंचायत लगा रखी है', ऐसे मुहावरे लोगों ने बनाए और बार लाकर स्थापित कर दिये। पूर्वी उत्तर प्रदेश में चमार जाति के उभार पर आश्चर्य के गीत बन गये।"[58]

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने अपनी आत्मकथा लिखते वक्त लोकोक्ति एवं मुहावरों का भरपूर इस्तेमाल किया है जैसे कि पशुओं में गधा, पक्षियों में उल्लू, जातियों में चमार इन कहावतों को दर्शाया है जिससे इनकी रचना लोकक्ति के माध्यम से और सुन्दर प्रतीत होती है।

<u>कहानी में मुहावरे:–</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपनी कहानी में सजीवता लाने के लिए पात्रों के अनुरूप स्थान-स्थान पर मुहावरे का प्रयोग करके भाषा को बोधगम्य बनाया है।

"लाडो का पिता सदाराम क्षणभर के लिए गम्भीर हुआ और पत्नी से बोला, "देखपीते लोग 'साठा हू पाठा' होवें हैं और जिन्हें खाइ-, जे खातेवे-- पीवे कूँ कछु नाँइ मिले है वे जवानी की जन्नत देखे बगैर बचपन के पतझर से गुज़र सीधे बुढ़ापे के मुर्दाघर में प्रवेश करें हैं, यानी मौत से पहले मरे हैं। मैं साठ-साठ साल के धनिकों कूँ घोड़ा सो दौड़तो देखतो हूँ। सुख से आराम में रहेगी, अच्छौ खावैगीपीवैगी, तो जेऊ जल्दी जवान हो जावैगी। वैसे और कितनी - बड़ी होगी, तेरे कंधा तक तो पहुँच ही गयी है।"[59]

उपर्युक्त पंक्तियां उनके कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'घूंघट उठा था क्या' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे मुर्दा घर में प्रवेश करे, साठा हूं पाठा आदि जिससे उनकी रचना और आकर्षक बन जाती है।

"चौधरी तो जाके बाप की उमरि तेंऊ बड़ौ होइगो । जे राजपूत तो औरतिन कू जमदूत हैं। इन्ने बड़ी बेकदरी कर रखी है घरवारिनु की। थोड़े दिन खिलौना-

गुड़िया बनाइकें खेलत हैं, फिर दूसरी तीसरी देखत हैं। नैंक कद-काठी की उन्नीस भई तो त्याग दई, तनिक कारी चमड़ी देखी तो धकेल दई। बालक नाँइ भए तो छोड़ दई, बालकनुँ में हूँ लड़का पैदा नांइ करे तो मानो पत्थर पैदा करि दए। उतने में मन नाइ भरतु तो पास-पड़ोस में ताक झाँक करें हैं। रही गयी बात ब्याहता की, तो चौधराइन बननो तो घूरे की कुतिया बनने जैसो होइ जावे है, औरतिनु की आजादी तो भंगी-बेटिनु की - चमारनु में होवे है, वे जाने हैं बहू कद्र करनों। सो उन्हें अछूत बनाइ रखो है। बेचारिनु की घरजमीनिनु पै जे - विदेशी हमलावरनु की तरह कब्जा कर लेवे हैं। इनके यहाँ तो औरत से गैया-भैसिया सौ गुना अच्छी हैं। ये औरत जात की कदर काहे करेंगे! मरिजाइ तो दहेज के-दूसरी तीसरी और दान नाम पर बाके माँबाप के घर दिन दहाड़े - खसोट ला-डाको डारि लूटवें हैं।"[60]

प्रस्तुत पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी घूंघट उठा था क्या? से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे दिन दहाड़े डाका आदि जिससे उनकी रचना और आकर्षक बन जाती है।

"फिर एक मौका आया कि 'सवली' पढ़ने के उद्देश्य से अब्रॉड चली गयी और भोरवती वहीं बनी रही। ग़रीब की बेटी भोरी शुरू से ही प्रतिभाशाली थी। उसने अच्छे परिणाम के साथ स्कूली पढ़ाई पूरी कर ली थी और अब वह कॉलेज जाने लगी थी। उसने बी.ए. कोर्स में दाखिला ले लिया था। उसके पास स्कूल के दिनों में केवल एक ही 'स्कूल ड्रेस' हुआ करती थी। कॉलेज में पहुँची तो उसके पिता कर्मदास ने उसे एक सादा सलवारकुर्ती बनवा दी थी। - पहन कर कॉलेज जाती थी और घर लौट कर उसे -वह हर दिन उसे ही धो सँभाल कर रख देती थी। शहर में हो चुके आउट डेटिड फ़ैशन के अपने पहने दो ड्रेस सवली उसे दे जाया करती थी। यद्यपि सवली के लिए वे वस्त्र -हुए एक पुराने होते थे, किन्तु भोरवती उन्हें पहन कर गाँव की लड़कियों में अलग दिखती थी। कई तो उसे उस पोशाक में 'सवली' होने का धोखा खा जाते थे। यूँ पुरानी पोशाक भी उस पर खूब फबती थी जबकि नैसर्गिक सौन्दर्य में वह इक्कीस थी। कर्मदास अपनी तंगहाली पर मन मार कर रह जाता था। माँ के अभाव में 'भोरी' जल्दी ही एक जिम्मेदार लड़की बन गयी थी। वह इस अभाव

बुद्धि होने के कारण क्लास में -में भी कुदरती ख़ूबसूरत थी और कुशाग्र अव्वल आती थी और सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रहने के कारण कॉलेज भर में प्रसिद्ध हो गयी थी।"[61]

श्यौराज सिंह बेचैन के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं'" की कहानी 'हमशक्ल' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जिससे इनकी रचना और आकर्षक बन जाती है।

“तुम क्यों बेवजह अपनी शान्ति भंग करती हो, वैसे भी तुम जो धमकियाँ दे रही थीं उनका कोई मतलब नहीं है। तुम्हें पता होना चाहिए कि कोई 'एस.सी., एस.टी. अथवा विमैन कमीशन' तो है नहीं तुम्हारा 'महिला आयोग' जो दलित-आदिवासी महिलाओं के केस समझेगा और एक्शन लेगा। ये तो वैसे ही सफेद हाथी हैं-कहते-कहते वह अचानक रुक गया।"[62]

उपर्युक्त पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'हमशक्ल' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे सफेद हाथी आदि जिससे उनकी रचना और आकर्षक बन जाती है।

"जातिबिरादरी के जिन लोगों ने अपने बेटे तक नहीं पढ़ाये थे और बेटी को -विवाह कर देने की सलाह दिया करते थे, उन -पढ़ाई से रोकने और बाल सबकी चढ़ बनी थी। 'जैसी करनी वैसी भरनी': किसने कहा था बेटी पढ़ाओ और जिसने भी कहा उसने यह क्यों नहीं कहा कि दलितों बेटी बचाओ। कह कर सब के सब आँखें फेरे हुए थे।"[63]

यहां बेचैन जी कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'हमशक्ल' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे-- 'जैसी करनी वैसी भरनी' आदि जिससे उनकी रचना और अधिक बोधगम्य बन जाती है।

"माधवी मन के द्वन्द्व में घिरी थी। एक ओर वह उसे आराम देना चाह रही थी,

तलब बन गया था। अतः वह प्र-दूसरी ओर मुद्दा बहसकेश को समझाते हुए बोली, "तो क्या इन सब बातों से कि वह हमारे निकट थी, हमारा फर्ज़ और अधिक नहीं बढ़ जाता उसके प्रति? यदि किसी विरोधी का हाथ इस प्रकरण में निकल आये तो जनमत का रुझान तो अपने पक्ष में ही जायेगा। इससे हम सम्पन्न फ़ैमिली होने के साथसाथ समाजसेवी भी प्र-चारित हो जायेंगे और चुनाव में बम्पर वोट पा जायेंगे। आम के आम, गुठलियों के दाम।"[64]

उपर्युक्त पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह "'हाथ तो उग ही आते हैं'" की कहानी 'हमशक्ल' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे आम के आम गुठलियों के दाम आदि जैसे मुहावरों का प्रयोग हुआ है जिससे उनकी रचना सरल और आकर्षक बन जाती है।

"देख, या तो आ जा, वरना सारे करे- धरे की ज़िम्मेदारी तेरे पर डालेंगे हम। तेरी ख़ैर इसी में है कि आगे बढ़ और तू ही, अरे! वो के बोले हैं इंग्लिश में हनीमून, ना शुभारम्भ तो तू ही कर। देख, बारिश में मैडम की देह का उभार देख, हमें कैसे बुलावा दे रहा है?" "अरे, तू यह क्या कर रहा है?" दिलीपा अहीर ने एक बार फिर कहा लेकिन उसकी एक न चली, और आख़िर उसने भी हथियार डाल दिये, बल्कि भयाक्रान्त हो वह भी बहती गंगा में हाथ धोने लगा। इस तरह पूरा गैंग सरवती के जिस्म से क्रीड़ा करने लगा। उन सभी ने सरवती को हाथों-हाथों उठा कर ट्रैक्टर ट्राली में पटक लिया था। उसके हाथ पर गुदा हुआ 'सरवती शर्मा' देख कर झुझुआ लोध ने गिद्दा गुर्जर से कहा- "देख रे, इस चमारी ने अपने हाथ पर क्या टैटू गुदा रखा है? ऐ गुदा के ते बांवणी बन री सै।"[65]

बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'आग और फूंस' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जिससे उनकी रचना सरस एवं बोधगम्य बन जाती है।

"डिबाई (कसेर) का रेलवे स्टेशन राजघाट (नरौरा) से पहला स्टेशन होने के दूर से बहुत लोग आया करते थे। जब -कारण यहाँ गंगा स्नान करने वाले दूर

गंगा स्नान पड़ता था तो गंगाभक्तों की भीड़ बढ़ जाती थी। तब तो मेला - लगता ही था। ऐसे में हमें जूतों की मरम्मत और टायर सिलने का काम उधर कम जाते -अधिक मिलता था। इसलिए अपनी जगह छोड़ कर हम इधर थे। ताऊ अक्सर मुझे लेकर खुद गंगा स्नान कराने जाया करते थे। वे कहते थे - 'गंगा मइया का ध्यान लगाओ, मन पवित्र रखो। अपने गुरु रैदास गंगा मैया के सच्चे भगत थे। उनका मन 'चंगा' था। वे कर्मकाण्डी ब्राह्मणों की तरह मन के मैले नहीं थे। इसलिए वे उनके मुकाबले के भगत नहीं हो सकते थे।' 'कठौती में गंगा' वाला चमत्कारी मुहावरा मेरे मन में अटका रहता था। मैं स्वयं हर रविवार प्रातः चार बजे जाकर गंगा स्नान किया करता था। उसी समय अपनी क्षमता के अनुसार कुली की भाँति लोगों का सामान चढ़ाने- उतारने में मदद करने का काम भी कर लिया करता था।"[66]

प्रस्तुत पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'आग और फूंस' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे मन चंगा तो कठौती में गंगा आदि जैसे मुहावरों का प्रयोग किया है जिससे इनकी रचना और आकर्षक जान पड़ती है।

"बेटा, तू मुझे राजघाट स्नान करा दे तो मैं चार आना उतरने के, फिर चार आना चढ़ाने के दूँगी और प्रसाद भी खिलाऊँगी..." मैं लालच में फँस गया था। अपनी यात्रा का विचार स्थगित कर मैं वृद्धा के साथ राजघाट नरौरा उतर गया। उसका सामान उठा कर गंगाघाट पहुँचाया। भीड़ में रेत के ढेर के बीच मैं उसके सामान के पास रखवाली करने बैठ गया। पण्डित चन्दन लगा रहे थे, स्त्री-पुरुष और बच्चे ठण्ड में सी-सी कर जल में डुबकी लगा रहे थे। उतरने के बाद तुरन्त उसने चार आना और दे दिये थे। अब मैं उसके साथ गंगाघाट तक चला गया। वृद्धा ने अपना सामान मुझे सौंपकर श्रद्धा भाव के साथ गंगा जल में डुबकी लगायी। हालाँकि वह हर डुबकी के बाद अपना सामान देख लेती थी। यदि मैं सामान उठाकर नौ-दो ग्यारह हो गया होता तो वह उस अपार भीड़ में मेरी परछाई भी नहीं पकड़ पाती। पर मैं ऐसा कैसे करता! मैं गंगाभक्त, गंगाराम, विद्याराम और भागीरथ का नाती खुद भी तो स्नान-ध्यान में आस्था रखता था।"[67]

श्यौराज सिंह बेचैन के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'वह अम्मा जैसी थी' से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे नौ दो ग्यारह होना आदि जैसे मुहावरों का प्रयोग किया है जिससे उनकी रचना और आकर्षक जान पड़ती है।

"कालू के साथ एक दिन और बुरा हो गया। लालबत्ती पर एक गाड़ी आकर रुकी, रंगीन चश्मा चढ़ाये उसने एक मैडम को देखा। उसने खिड़की के अन्दर हाथ डाल कर भीख माँगी। तभी मैडम का फ़ोन बजा, वे बातें करने लगीं और उसी वक़्त बत्ती खुली और गाड़ी आगे बढ़ गयी। उसमें कालू का हाथ फँस गया और वह गाड़ी के साथ ही दूर तक घिसटता चला गया। ट्रैफिक वाले मोटरसाइकिल वालों से बिना रसीद उगाही करने में व्यस्त थे, इसलिए उनका तो उस ओर ध्यान ही नहीं था। मैडम उसे सड़क पर रोता छोड़ नौ-दो ग्यारह हो गयीं।"[68]

बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी छोटू से ली गई हैं जिसकी भाषा सरल आम बोल चाल की भाषा का प्रयोग शोधार्थी को यहां प्रतीत होता है और यहां लेखक ने मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है जैसे नौ दो ग्यारह होना आदि जो की जैसे मुहावरों का प्रयोग किया है जिससे उनकी रचना और आकर्षक जान पड़ती है।

<u>कविता में मुहावरे :--</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने कविताओं में सजीवता लाने के लिए साहित्य के लक्षणों का प्रयोग प्रसंग अनुसार किया है इसका उदाहरण पेश किया जा रहा है।

"पक्ष का प्रभाव

या विपक्ष का दबाव

दोनों पाट बीच

जनता बन रही मसाला हो ।

कोई बदलाव

ज़िन्दगी में नहीं आ रहा हो ।

हरेक चुनाव

एक छल हो घोटाला हो ।

कुर्सियाँ विरासत में

मिल जाएँ वंशजों को

और लोकतन्त्र

धनतन्त्र होनेवाला हो ।

बगुला के पंखों के

समान उजले हों तन

और मन कोयलों के

रंग से भी काला हो।"[69]

यहां कवि ने कविता लिखते समय मुहावरों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया हुआ जिससे उनकी कविता में एक अलग ही स्तर पाठक को पढ़ने से प्राप्त होता है जिसका प्रमाण शोधार्थी ने कवि की रचना ' नारा बस' से लिया है।

"पेटपीठ मिल एक रहे जो बरसा, सूखा, धूप में-

संकट ही संकट आये हैं खुशहाली के रूप में

शोषणकारी नाग निठल्ले, पहुँच रहे हर ठाँव रे।

मिली न असली हक़दारों को आज़ादी की छाँव रे।"[70]

बेचैन जी ने अपने काव्य संग्रह नई फ़सल की कविता 'जीवन दांव रे' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जिसमें उनके काव्य में नाद सौंदर्य के साथ - साथ अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

"जो सरकारी कलमकार हैं, रिश्वत जैसे पुरस्कार हैं

सच्चाई पर पटाक्षेप है, जनजीवन में अंधियार है।

उठो संगठित होकर जूझो, भरो पुराने घाव रे।

मिली न असली हकदारों को आज़ादी की छांव रे"[71]

कवि बेचैन ने अपने काव्य संग्रह 'नई फ़सल' की कविता 'जीवन दांव रे' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जिसमें उनके काव्य में अलंकारों एवं गेयता के गुण पाए जाते हैं।

"सवर्ण सेठ की मृत कुतिया -

को देते कन्धा लोग मिले ।

कभी पसीने में भीगे या

कभी उदासी में डूबे

बेहतर कल की रहे फ़िक्र-

में दौरेहाज़िर से ऊबे

मेहनत की खातेखिलवाते-

मुझको ज़िन्दा लोग मिले ।।"[72]

बेचैन जी ने अपने काव्य संग्रह 'नई फ़सल' की कविता 'जिन्दा लोग' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जिसमें उनके काव्य का अलग ही महत्त्व प्रतीत होता है।

"तो अक्षरों ने भी सँभाला उसे,

दूर से देर से -

दिखलाया उजाला उसे

पर जब वह

बूढ़े की लाठी की तरह

पकड़कर निकला अक्षर

छोड़कर गाँवघर -

तब हो गया बेरोज़गार

भूख ने उसे

पढ़ने से रोका बारबार ॥-"[73]

"जिन अछूतों को

इतिहासबोध के साथ-

नया संविधान

सिखाया जाता है

मनु सुनते ही,

वहाँ से

नौ दो ग्यारह हो जाता हैं।"[74]

कवि ने अपने काव्य संग्रह 'चमार की चाय' की कविता 'चमार की चाय' और 'मनु को मात' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की बूढ़े की लाठी तथा नौ दो ग्यारह होना जैसे मुहावरों को संबोधित करता है।

"जैसे ही दलित अपनी

आत्मकथा कहता है

मनु रफू - चक्कर हो लेता है और

जिन अछूतों के बच्चे

यूके या यूएसए में

पढ़ने जाते हैं

उनकी ज्ञात- अज्ञात

सब पीढ़ियों से

श्री श्री.....

मनु महाराज का नामों निशान

मिट जाते हैं"[75]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने अपने काव्य संग्रह 'चमार की चाय' की कविता 'मनु को मात' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की रफू चक्कर होना जैसे मुहावरों को संबोधित करता है।

"खून ही आता था-

उनकी आँखों में।

दलितों, पिछड़ों, स्त्रियों और

मुसलमानों के ख़िलाफ़।"[76]

कवि श्यौराज सिंह बेचैन ने अपने काव्य संग्रह 'भोर के अंधेरे में' की कविता 'अचम्भा' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की आंखों में खून आना जैसे मुहावरों का प्रयोग करता है

"राहतें

यहाँ भी मिलती हैं

ऊँट के मुँह में जीरा

जैसे कोई

एक हाथ से बम

दूसरे से रोटी फेंकते हो

इस विवशता भरे

देश में दलितों को समता कहाँ है?

इंसानी नस्ल में

भेदभाव है।"[77]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अपने काव्य संग्रह 'भोर के अंधेरे में' की कविता 'अमेरिका' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की ऊंट के मुंह में जीरा जैसे मुहावरों को संबोधित करता है तथा इनके काव्य को और सुन्दर बनाता है।

"पहाड़-सी बेचैनी-

में राई - सा सुकून

सागरसी प्यास में-

स्वाति की बूँदसा जल-

मिला तो सही।"[78]

कवि बेचैन ने अपने काव्य संग्रह 'भोर के अंधेरे में' की कविता 'आज़ादी' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की राई-सा सुकून जैसे मुहावरों को प्रयोग करता है।

"लेकिन हमारे वास्ते-

हर ओर कंगाली मिली।

अपने लिए तो यह सुबह

उस रात से काली मिली।"[79]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अपने काव्य संग्रह 'भोर के अंधेरे में' की कविता 'यह सुबह' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की सुबह रात से काली मिलना जैसे मुहावरों को संबोधित करता है। जो की कवि की रचनात्मक शैली को दर्शाता है।

"पर दिमाग़ी रिश्ते ने-

गुड़ गोबर कर दिया।

उसे मिल गया

जातिबोधक यार-

उसकी मोटरसाइकिल

से आदिम कबाड़ी -'पाँव

गाड़ी' का मेल नहीं था

हार गया सम्बन्धों का जुआ।"[80]

कवि ने अपने काव्य संग्रह 'भोर के अंधेरे में' की कविता 'यादों में' की इन पंक्तियों में मुहावरों का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है जो की गुड गोबर करना जैसे मुहावरों को प्रयोग करता है। जिससे इनका काव्य और भी ज्यादा आकर्षक लगता है।

–: प्रतीक एवं बिम्ब :–

आत्मकाथा में प्रतीक एवं बिम्ब :–

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपनी बातों को गहराई से प्रतीक एवं बिम्ब के माध्यम से व्यक्त किया है जिसे पाठक सुगमता से उस आशय को जान सकता है जो साहित्य की उपयोगिता को दर्शाती है।

"जब मेरी उम्र दस-बारह साल थी, मेरे आसपास ऐसे जाति गीत गूंज रहे थे-

चप्पल पहन चमाइन चले,

सैंडल पहन धोबनिया,

हाय मोरे रामा बदल गयी दुनिया॥

इस गीत से जाति द्वेष और ईर्ष्या भाव भरा सामाजिक अलोकतन्त्र का कैसा बिम्ब उभरता है? पर राजनीति में इसी वर्ग की बहन मायावती का मुख्यमन्त्री होना एक चमत्कार था।"[81]

उपर्युक्त पंक्तियों में बेचैन जी ने बिंबात्मक शैली का बहुत ही आकर्षक रुप दर्शाया है जिसका हम चिन्तन मनन करते हुए पाठन करते हैं तो हमारे समक्ष एक बिम्ब उभर कर सामने आ जाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि यह

घटना हमारे सामने ही घटित हो रही हो।

<u>कविताओं में प्रतीक:-</u>

"संग्रह का शीर्षक (क्रौंच हूँ मैं) भी मेरा पहले से सोचा हुआ नाम नहीं था। यह नामकरण भी चलतेचलते यूं ही अचानक हो गया। तब इसकी ऐतिहासिक - सम्बर्द्धता की -व्यंजना, प्रतीकात्मकता, रूपक और कथासुखद कल्पना भी मुझे होने लगी। तीन प्रतीक चित्र मेरी दृष्टि में उपस्थित हुए। पहला प्रतीक वह वर्ग या घटक है जो दूसरे वर्ग के लिए शिकारी है। दूसरा वर्ग संवेदनशील कारुणिक प्रेक्षक जो आहत के प्रति रागात्मक संवेदना व्यक्त करता है यह आज का वाल्मीकि है, आदि कविता का जनक नहीं। तीसरा वर्ग व्यवस्था का सीधा शिकार हुआ वर्ग 'क्रौंच' है जो प्रतिनिधि है आज के मूक, उपेक्षित, पहचान हीन जातीय हीनता बोध के घेरे में कैद मानव समुदाय का जो शिकारियों के प्रहारों से घायल, उत्पीड़ित, दमित और कुल मिलाकर जिंदा लाश की शक्ल में है। वह भी एकदो नहीं, बहुसंख्य विशाल विश्व। जीवन की - आजादी, तरक्की से वंचित रखे या यह सब पाने में अक्षम बनाये घायल कराहते, चीखते या तड़पते इन्हीं अनेक धरतीपुत्रों में एक -'क्रौंच' भी है। उसके पास परंपरागत भाषा संस्कार कहाँ से आये पक्ष की -? सृजन के कला शास्त्रीय लीक वह कैसे और क्यों पीटे ? वह लीक जब उसकी सृजनशीलता अवरुद्ध ही करती हो, तब केवल जिजीविषा ही उसके रचनात्मक आवेग का केन्द्र बनती है। और शर्तें रचना के आगे नहींवह -, पीछे. पूरी होती चलती हैं भी अपने स्वरूप में।"[82]

"वाल्मीकि

मैं नहीं हूँ।

'क्रौंच हूँ मैं' ।।"[83]

कवि श्यौराज सिंह बेचैन जी ने यहां पर बिम्ब तथा प्रतीक की शैली को हमारे समक्ष रखा है जिसमें लेखक एक क्रौंच पक्षी के माध्यम से खुद को प्रस्तुत कर रहा है जिस आधार पर क्रौंच पक्षी यहां एक प्रतीक जान पड़ता है।

"बात यह कि हम किसी,

व्यक्ति के पुजारी नहीं,

चाटुकारिता तो हम

कर नहीं पायेंगे।

मानवास्तित्व से

सुहागिनी रहे धरा

मानव विरुद्ध

कोई युद्ध नहीं चाहेंगे।"[84]

यहां पर कवि ने मनुष्य के व्यक्तिव के बारे में बताते हुए उसके अस्तित्व को प्रतीक के माध्यम से दर्शाया है जो की मानवस्तीत्व से धारा प्रतीक को एक सुहागिन बना दिया है।

"इस हाड़-

मांस के पिंजर को

बेरोजगार-

को, बेघर को

महंगाई-

गरीबी

बच्चों की गर्दनों

को कसती जायेगी।

गेहूँ, चावल

की चाह छोड़,

सुख के सपने

दम रहे तोड़

सब्जी को सांप सूंघते हैं

क्या खाक टमाटर खायेगी।

वह सदी जब तलक आयेगी"[85]

इन पंक्तियों में बेचैन जी ने बगुले के पंख को प्रतीक की संज्ञा दी है तथा शोधार्थी ने यहां पर कवि के रचना कौशल को प्रस्तुत किया है जिसमें कवि ने प्रतीक एवं बिम्ब शैली का प्रयोग किया है।

"ये जो साम्प्रदायिकता की आग है-

भाल पर दरिद्रता का दाग है।

जिसके खून ने वसंत ला दिया-

ज़िन्दगी उसे 'खिजाँ' का बाग है

'यूँ' कैसे बागवाओं को सराहेंगे।"[86]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने सांप्रदायिकता को अग्नि जैसे प्रतीक से संबोधित किया है की सांप्रदायिकता उस आग के समान है जो सबकुछ जला कर नष्ट कर देती है। उनकी यह पंक्तियां "नई फ़सल" के कहानी संग्रह की समूह - गान" से उद्धरत हैं।

"गगन में सूर्यचन्द्र -

और चाँदनी बनी रहे

चमन बना रहे

चमन की स्वामिनी बनी रहे ।

कोयलों के

कंठ की माधुरी बनी रहे ।

रागियों के-

अधरों की रागिनी बनी रहे।"[87]

बेचैन जी की ये पंक्तियां 'नई फ़सल' से ली गई हैं जिसमें प्रकृति के बहुत ही मूल्यवान वस्तुएं को प्रतीक बनाया है जो की प्रतीक के माध्यम से उनकी

रचना बहुत ही सुंदर और आकर्षक जान पड़ती है।

"लाया हूँ तजुर्बात,

इस राहे गुजर से मैं।

क़ातिल के साथ ही था

मसीहा के डर से मैं।।

मेहनत के सितारे हैं

ज़मीं पर गिरे हुए।

प्रगति के चाँदसूर्य-

शान्त शर्म से हुए।।"[88]

कवि बेचैन की ये पंक्तियां "नई फ़सल" से ली गई हैं जिसमें प्रकृति के बहुत ही मूल्यवान वस्तुएं जैसे चंद्रमा, सूर्य को प्रतीक बनाया है जो की प्रतीक के माध्यम से उनकी रचना सुंदर और आकर्षक जान पड़ती है।

"फिर पेट के सवाल पर

देश का नाम लेलेकर -

तकरीरें व तकरारें बढ़ी हैं।

पूँजीवादी साँप दूध पर पले हैं

कामगारों के पेट, पीठ से सिले हैं।

समाजघाती लोग

समाजवाद ला रहे हैं"[89]

उपर्युक्त पंक्तियां बेचैन जी कविता "नई फ़सल" से ली गई हैं जिसमें प्रकृति के मूल्यवान वस्तुएं जैसे सांप, दूध को प्रतीक बनाया है जो की प्रतीक के माध्यम से उनकी रचना सहज सुंदर और आकर्षक दिखाई पड़ती है।

"देह मुझे चिढ़ाती है

पूछती है अर्थ

सेवाएँ हैं व्यर्थ

कुर्सी कुँवारी 'माँ' सी

पैसे की नाज़ायज

सन्तान को देती है बढ़ावा ।

करती है पाकीज़गी का दावा

कुर्सी लगती है

खलनायकों में फँसी सचरित्रा ।"[90]

बेचैन जी की ये पंक्तियां 'नई फ़सल' से ली गई हैं जिसमें प्रकृति के मूल्यवान वस्तुएं तथा भौतिक वस्तुओं जैसे कुर्सी को एक कुंवारी मां का दर्जा दिया है जिसको प्रतीक बनाया है जो की प्रतीक के माध्यम से उनकी रचना सुंदर, सहज और सरल जान पड़ती है।

"बड़ी उदास रात है

न मेल है न प्यार है।

जलाओ दीप साथियो

कि घोर अन्धकार है।

सिसक रहा है चाँद अब

तड़प रही है चाँदनी ।

गलीगली दरिद्रता-

सुना रही है रागनी ।

ज़िन्दगी गरीब की

अमीर का शिकार है।

जलाओ दीप .....।।."[91]

कवि श्यौराज सिंह बेचैन जी की प्रस्तुत पंक्तियां 'नई फ़सल' से ली गई हैं जिसमें प्रकृति के मूल्यवान वस्तुएं तथा भौतिक वस्तुओं जैसे दीपक, चांद को प्रतीक बनाया है जो की प्रतीक के माध्यम से उनकी रचना बहुत ही सुंदर और आकर्षक जान पड़ती है।

"माँगने से भीख

भी नहीं है अधिकार कहाँ?

इन नेता, अभिनेताओं

का काम बरगलाना है ।

मौसम दहेज का बनाए

ही रखेंगे तब तो

ज़िन्दा बहूबेटियों-

की अर्थियां उठाना है।

जाति, धन, धर्म

की विषमता रहेगी नहीं

भीम के सपूत

ऐसा भारत बनाना है ।"[92]

कवि की ये पंक्तियां 'नई फ़सल' से ली गई हैं जिसमें प्रकृति के वस्तुओ को प्रतीक बनाया है जो की प्रतीक के माध्यम से उनकी रचना बहुत ही सुंदर और आकर्षक जान पड़ती है जिसे पढ़कर पाठक वर्ग उसकी और आकर्षित होता है।

"कर देगा, कि सच्चाई चुनो।

फिर कलम खंज़र

बना लो, गीत में शोले भरो

दलित कवि

हर्गिज़ न लिखेगा

उसूलों के खिलाफ़।"[93]

कवि बेचैन की ये पंक्तियां 'नई फ़सल' से ली गई हैं जिसमें कलम को खंजर बनाने की बात की गई है जो की प्रतीक के माध्यम से इनकी रचना बहुत ही सुंदर और आकर्षक जान पड़ती है। जो पाठकों को वीर रस से ओतप्रोत कर देती है।

"हम जड़ें

जब तक

तुम्हें सँभाले हैं

माँ के दूध की तरह

अपना श्रम सीकर पाले हैं।"[94]

प्रस्तुत पंक्तियां 'नई फ़सल' से ली गई हैं जिसमें प्रकृति की वस्तुओ जैसे मां का दूध, जड़ को प्रतीक बनाया है जो कि प्रतीक के माध्यम से उनकी रचना आकर्षक जान पड़ती है।

बिम्ब:-

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने भाषा को सारगर्भित करने के लिए प्रतीक एवं बिम्ब का आवश्यकता के अनुसार प्रयोग किया है जिसे उदाहरणों से देखा जा सकता है।

"यह मशीनों

का समय है।

यह कदाचित्

आदमी को भी

मशीनों में बदल दे।"[95]

उपर्युक्त पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का बहुत ही सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। ये

पंक्तियां बेचैन जी की 'क्रौंच हूं मैं' कविता से ली गई हैं जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक बिम्ब उभरता है और ऐसा प्रतीत होता है की हम उस उस दृश्य को अपने समक्ष देख रहे हैं।

"लाल 'बस'

गन्तव्य पर

पहुंचती है पहले और

चलती है देर से।

लाल बस

पीती है डीजल

और खाती है व्यक्ति ।

लाल बस

कालबस हैं -

पहुंचा देती है शीघ्र

ऊपर भी"[96]

प्रस्तुत पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का बहुत ही सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक बिम्ब उभरता प्रतीत होता है की हम उस उस बिंब को अपने समक्ष देख रहे हैं।

"बादलों के मौसम में नैन क्यों बरसते हैं?

बिल में रहने वाले तो छेड़ने पै काटे थे-

नाग - पंचमी के दिन पूज लिए जाते थे ।

पर ये रोज़ पुजते हैं, पाँच साल डसते हैं।

मुल्के मुफलिसी का ग़म अपने हमनशीं का ग़म

शायरों के सीने में सारे ग़म उतरते हैं।"[97]

उपर्युक्त पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का बहुत ही सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक बिम्ब उभरता है और ऐसा प्रतीत होता है की हम उस बिंब को अपने समक्ष देख रहे हैं।

"कारवाँओं के गुबार ।

मन कभी होता प्रफुल्लित

और कभी होता उदास ।

फूलती सरसों कभी,

झरते कभी हैं अमलतास ।

दिन कभी सुखमय कभी

करते सितारे बेकार।

देखती रहती हैं आँखें.....।।"[98]

श्यौराज सिंह बेचैन जी द्वारा रचित पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया गया है। जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक बिम्ब उभरता है की सरसों, अमलतास में किस तरह से परिवर्तन हो रहे हैं और ऐसा प्रतीत होता है की हम उन दृश्यों को अपने समक्ष देख रहे हैं।

"स्वराज से भी बढ़कर थी

उनकी वर्ण सर्वोच्चता

पेशवाई की तबाही थी अछूत के घर

सछूत के लिए तो हर रात दीवाली थी

और हर दिन अच्छा दिन था

यदि कुछ नहीं था तो अछूत का

यदि कुछ नहीं है तो दलित का

समता का सवाल आज भी

मुँह फाड़े है कल भी मुँह फाड़े था?"[99]

प्रस्तुत पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। ये पंक्तियां बेचैन जी की 'भोर के अंधेरे में' कविता से ली गई हैं जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक बिम्ब उभरता है जो की समाज में फैली हुई असमानता को दर्शाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि उस बिंब को अपने समक्ष देख रहे हैं।

"मेरी पत्नी ने-

हमारे दो

बच्चों को जन्म दिया।

सारा दर्द, अकेले सहा

इन्साफ तो

तब होता कुदरत का

एक बच्चा

मेरे पेट में भी रहा होता

असल में मैं भी माँ ही हूँ

मेरे विचार पुत्र असंख्य हैं

मुझे रक्त पुत्रों से कम

विश्वस्त, कम कारगर और

कम होनहार नहीं लगते।"[100]

बेचैन जी की इन पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का बहुत ही सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। ये पंक्तियां बेचैन जी की "भोर के अंधेरे में" कविता से ली गई हैं जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक दृश्य उभरता है जैसे यहां एक लाचार परिवार की बदहाल स्थिति को दर्शाया है और ऐसा प्रतीत होता है की हम उस बिंब को अपने सामने देख तथा महसूस कर रहे हैं।

"आज गुलशन में बुलबुलों ने चहकना छोड़ा,

ऐसी रुत आयी कि फूलों ने महकना छोड़ा ॥

हरेक शाख मुन्तज़िर है, कि आ जाये बहार,

आदमीआदमी को करने लगे दिल से प्यार।-"[101]

प्रस्तुत पंक्तियों में बिंबात्मक शैली का बहुत ही सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है ये पंक्तियां बेचैन जी की 'भोर के अंधेरे में' कविता से ली गई हैं जिसे पढ़ते हुए हमारे सामने एक बिम्ब उभरता है। जैसे कि आदमी का आदमी के साथ किस प्रकार से दिल का रिश्ता जुड़ सकता है और ऐसा प्रतीत होता है की हम उस बिंब को अपने समक्ष देख रहे हैं।

<u>कहानी के प्रतीक और बिम्ब :–</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने कहानियों में अपनी बातों को स्पष्ट करने के लिए प्रतीक एवं बिम्ब का उचित प्रयोग किया है।

"हाँ, कह तो सच रहे हो, दे तो छायावती भी कुछ नहीं पायीं गरीब दलितों को, उनके अफ़सर ग़रीब से मिलते नहीं, उनके नेता गरीबों को देख कर आँखें फेर लेते हैं। जिन बच्चों को प्राथमिक स्कूल चाहिए उनको मूर्तियाँ पकड़ा रहे हैं। कॉलेज में जाने वाला मन्दिर-मार्ग पर भटक रहा है फिर भी मैं छायावती को ही चुनता हूँ क्यों? इसलिए कि जब मैं देखता है कि मेरी मरती-पिटती मैया की बेटी सी. एम. बन चलती है तो क्रूर से क्रूर ब्राह्मण-ठाकुरों के कलेजे काँपते हैं, उसके चरणों में गिरते हैं। उसकी सत्ता आती है तो इससे क्या होता है? थोड़ी देर के लिए स्त्रियाँ खुद को छायावती समझने लगती हैं। दलितों के गाँव में, स्कूल में, बच्चों का पढ़ना निश्चित हो जाता है क्या? मुफ़्त स्वास्थ्य सेवा देने वाले अस्पताल बन जाते हैं, शौचालय बन जाते हैं। कांग्रेस की ओर लौटते हो। क्यों नहीं अपने गाँव में दलितों के लिए अंग्रेज़ी मीडियम के सरकारी स्कूल खुलवाते हो? छायावती तो नहीं कर पातीं प्राथमिक शिक्षा की फ़िक्र, कम-से-कम तुम तो करो।"[102]

प्रस्तुत पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'हमशक्ल' से ली गई हैं इनमें इन्होंने इस तरह से बिम्ब तथा प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है बिंब के माध्यम से हमें ऐसा प्रतीत होता है कि इस कहानी

के किरदार हमारे सामने अभिनय कर रहे हों। और प्रतीक के ऐसे सजीव उदाहरणों का प्रयोग हुआ है की मानो निर्जीव वस्तुओं में जीवनत्ता भर गई हो।

"पर सरवती ने अपना कथन जारी रखा, उसने कहा, "सोच तो आप और ही कुछ रहे हैं। मसलन, आप मुझे दूर करके ईसाई या मुसलमान तक बनने को तैयार हैं। पर क्या आप जानते नहीं हैं कि मुसलमानों में तो केवल दूध बचा कर शादियाँ तक हो जाती हैं, और आप हैं कि हमारे ब्राह्मणों के भी ब्राह्मण बन रहे हैं। खैरमुँह धो लें, मैं खाना बनाकर ला रही हूँ।" -, छोड़िए आप हाथ कहती हुई वह रसोई में चली गयी। लौटी तो देखा दाताराम बड़ी तल्लीनता से कोई गीत गुनगुना रहा है। इस गीत के बोल सरवती के दिल को छू गये। ऐसे बोल उसने पहले कभी नहीं सुने थे। दाताराम गा रहा था.... "काल गाल में सब ही समा गये। का राजा का रानी रे...! रे मत कर ये नादानी रे! ओ जात धरम.... अभिमानी रे...। जर, ज़ोरू, ज़मीन का क्या यू यहीं पड़ी रह जानी रे!, ओ अन्धे, अग्यानी रे!" सरवती सुन कर ठिठक गयीगाते -, और जब वह गाते शान्त हो गया तब खाना लेकर सामने उपस्थित हुई। "रख दो, और तुम भी अपना खाना ले आओ, साथ बैठकर खायेंगे।" वे चुपचाप निःशब्द खाना भाव, देह भाषा में ज़रूर कुछ बोलते रहे। खाना खा -खाते रहे, हाँ उनके हाव -अपने कमरे में चले गये। लेटे-कर दोनों अपनेलेटे कुछ देर तक सरवती के ज़हन में दाताराम का गीत गूँजता रहा। उसमें उसे सन्तों की वाणी का आभास होता रहा।"[103]

उपर्युक्त पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'आग और फूंस' से ली गई हैं यहां बिम्ब तथा प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है जैसे इस कहानी के किरदार बिंब के माध्यम से हमें ऐसा प्रतीत होता है कि इस कहानी के किरदार हमारे सामने अभिनय कर रहे हों। प्रतीक के ऐसे सजीव उदाहरणों का प्रयोग हुआ है की मानो निर्जीव वस्तुओं में जीवनत्ता भर गई हो।

"यह बिस्तर आराम का साधन नहीं रह गया है। इधर सरवती पहली ही नींद में चीख पड़ी, उसे लगा कि कोई उसके पति को गहरे पानी में धकेल कर उसके साथ ज़बर्दस्ती कर रहा है। वह शेर के पंजे में फँसी हिरनी की तरह पहले अनुनय-विनय कर रही है और फिर बचाव के लिए जद्दोज़हद । कुल मिलाकर

उसकी रात आराम से नहीं गुज़री। सरवती उठी और मुँह-हाथ धो कर चाय बनाने लगी। दाताराम उधर से हाथ में अख़बार उठाये रसोई के पास पड़ी सरकंडों से बनीं छोटी कुर्सी पर बैठ कर अख़बार उलटने पलटने लगा। गाँव में अख़बार अभी-अभी आना आरम्भ हुआ है, वह भी एक दिन पुराना। सरवती ने चुपचाप एक कप चाय लाकर उसके आगे रख दी और अपना कप लेकर उसारे में चली गयी और बाहर की ओर मुख़ातिब होकर चाय पीने लगी। सामने बाँस पर बैठे चिड़ी-चिरौटा चीं-चीं कर चोंच लड़ा रहे थे। वह कप रख कर छत पर चली गयी, पिछवाड़े बाग़ था । बाग़ में बन्दर-बन्दरी मैथुन-मग्न थे। सबके सामने सम्भोग करते देख उसे पालतू डॉगी पर गुस्सा आया, सौत इसीलिए तो तुझे कुतिया कहते हैं! कल अपने पेट से निकाले को चढ़ाये थी, और आज उसके बाप के साथ... बच्चों पर क्या असर होगा... उधर कप खाली कर उठते हुए दाताराम ने आवाज़ दी, “सरवती, ओ सरवती, कहाँ हो?"[104]

ये पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'आग और फूंस' से ली गई हैं यहां उन्होंने इस तरह से बिम्ब तथा प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है जैसे इस कहानी के किरदार हमारे सामने अभिनय कर रहे हों और प्रतीक के ऐसे सजीव उदाहरणों का प्रयोग हुआ है जिससे प्रसंग बहुत ही आकर्षक जान पड़ते हैं।

"उसे लगा गर्मी से राहत देने वाला मौसम सुहाना हो रहा है। तीतर-बटेर उड़ रहे हैं, मोर नाच रहे हैं। चिड़ियाँ चहचहाने लगी हैं, कबूतरों के झुंड आने लगे हैं। इससे दाताराम का मन हुआ कि वह काम रोक कर सुस्ताये और कंठ खोल कर कुछ गाये-गुनगुनाए- "आओ जी, आओ बदरा, धरनी पै छाओ बदरा...।" तो देखते-देखते पानी मूसलाधार हो गया, खेत में खड़ा दाताराम सिर से पाँव तक तर हो गया। मिट्टी कीचड़ में तब्दील हो गयी।"[105]

प्रस्तुत कहानियों में सुंदर ढंग से प्रतीक एवं बिंबो का प्रयोग श्यौराज सिंह बेचन के द्वारा अपनी कहानियों में किया गया है जिससे पाठक सहज एवं सरलता से अपने आप को जोड़ लेता है।

"उस डॉक्टर ने एक सर्जन को बुलाया और उससे मशविरा करने के बाद तय कर पाया कि बच्चे को अगर ज़िंन्दा रखना है तो इसके दोनों हाथ काटने

पड़ेंगे। रुक्खो तो सुनते ही बेहोश हो गयी। नर्स को लगा, कहीं यह मर ही न जाये तो झूठी दिलासा देने लगी- “हमारे अस्पताल में कटने वाले हाथों की जगह फिर से नये हाथ उग आते हैं या वैसे ही जोड़ दिये जाते हैं, जैसे गणेशजी के सिर पर हथिनी के बच्चे का सिर जुड़ा था, युद्ध या दंगे में कटे किसी के हाथ की जगह दूसरे के जोड़ दिये जाते हैं। नहीं तो ऐसी दवा पिला दी जाती है कि थोड़े ही दिनों में हाथ खुद-ब-खुद उग आते हैं।" बेटे का चेहरा देखते हुए रुक्खो ने आँसुओं की धारा को रोका और बोली - "बेटा सुना, हाथ तो उग आते हैं!...."[106]

उपर्युक्त पंक्तियां बेचैन जी के कहानी संग्रह 'हाथ तो उग ही आते हैं' की कहानी 'हाथ तो उग ही आते हैं' से ली गई हैं यहां उन्होंने इस तरह से बिम्ब तथा प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है जैसे इस कहानी के किरदार हमारे सामने अभिनय कर रहे हों और प्रतीक के ऐसे सजीव उदाहरणों का प्रयोग हुआ है। इसमें समग्र भाषा शैली के रूप को चित्रित किया है।

–: तत्सम और तद्भव शब्द :--

आत्मकथा में तत्सम और तद्भव शब्द:–

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने आत्मकथा में ग्रामीण अंचल के शब्दों एवं भाषाओं का प्रयोग किया है जो उदाहरणों में देखा जा सकता है।

होली से तीसरे दिन सूर्य निकलते ही दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर मैं सीधा प्रेमपाल सिंह के घर पहुँचा और अपने अस्पृश्य बोध के साथ बाहर कोने में जाकर खड़ा हो गया। उनके घर में उस समय केवल तीन सदस्य थे- अनौखिया बऊ', कक्षा आठ की छात्रा उनकी बेटी 'मलना' और खुद मास्टर प्रेमपाल सिंह यादव। भाई की मृत्यु के बाद मास्टर साहब को भाभी ने ही पालालिखाया था। पति की मृत्यु के बाद वे स्वयं मास्टर -पोसा और पढ़ाया- बीस साल बड़ी थीं, इस -साहब को बैठा दी गयी थीं। हालाँकि उम्र में पन्द्रह कारण प्रेमपाल सिंह 'बऊ' को बहुत मानते थे। वे अपना रौब रखती थी। घर की माली दशा सुधारने के लिए कंजूसी की हद तक मितव्ययी थीं। बाद में प्रेमपाल सिंह मुझे संस्कृत पढ़ाते थे। एक श्लोक मेरे ध्यान में रहता था-

"न ददाति न चाश्नाति, धनं रक्षितम् जीवतम्

यस्य कृपणा-कस्य प्रिय न भवति ॥"[107]

प्रस्तुत पंक्तियों में शोधार्थी ने तत्सम तद्भव शब्दों को ढूंढा है जिनका लेखक ने अपनी आत्मकथा को लिखते हुए प्रयोग किया है तथा साथ ही संस्कृत युक्त श्लोकों का भी बहुत ही आकर्षक रुपों का वर्णन किया है।

<u>देशज शब्द –</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी की आत्मकथा में भाषा के सभी स्तरों का उपयोग किया गया है जो निम्न उदाहरणों से व्यक्त किया गया है।

"आखिर चाचा (पिता) को डेढ़ रुपये का जुर्माना देना पड़ा और ऊपर से मार खाई सो अलग। हमारे घरों की महिलाएँ भी अत्यधिक काम करती थीं, परन्तु तरीके पुरुषों के ही चलते थे। वे किसी दबाव से नहीं, -परिवार चलाने के तौर बल्कि स्वतःस्फूर्त ढंग से अपनीअपनी जिम्मेदारियाँ सँभालते थे। पिता - जिन्दा थे तब तक घर में एक भैंस या गाय दूध के लिए पाली जाती थी। अलग थे। चमड़ा रंगने के लिए एक 'कुइयाँ' थी, -बब्बाओं के 'गलुआ' अलग बाकी दो पर पानी के साधन नहीं थे। अतः इस नाममात्र की कृषि में श्रम ज्यादा लगता था और उत्पादन बहुत कम होता था। कम जमीन होने के कारण बैल हम कभी पाल नहीं पाए। जुताई भी होती तो किराए पर । पशुओं का चारा काटना, उन्हें खिलाना, दूध दुहना तथा गोबर- कूड़े का सारा काम प्रायः महिलाएं ही करती थीं। कूड़ा हम घर के पीछे जमा करते रहते थे। आठ-दस दिन बाद उसे बोरे या पल्ला (बड़े टोकरे) में भर कर ले जाते थे। गंगी बब्बा बड़े मजबूत व्यक्ति थे। मेरे पिता स्वेच्छा से सामर्थ्यानुसार काम करते थे।"[108]

इन पंक्तियों में लेखक ने देशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां गलुआ शब्द का प्रयोग लेखक ने किया है जिसका अर्थ भूमि का छोटा टुकड़ा होता है।

"अब नव व्याहुली बहू को टोड़ी या जानकी के घर उतारने वाली प्रथा भी समझ में आयी। मेरा घर छिका होने के कारण इस प्रथा से बाहर रहा। यह प्रथा इस तरह चालू थी कि नई बहू के पहली बार मान के घर उतरने से उसकी आमद अशुभ नहीं होती। टोड़ी और मान की वंश बेल हैं। उन्हीं के यहाँ हमारे पुरखों ने शरण ली थी। वे पूर्वजों की बेटी की ओर से ज्यादा नजदीक हैं।"[109]

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने देशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहाँ 'छिका' शब्द का प्रयोग लेखक ने किया है जिसका अर्थ 'जाति से बाहर' होता है।

“करवायो भइया, खच्चा उठावन की क्या बात है। जो तुम कहौगे उठाइ लिंगो।" वांसनी (कमर में बाँधी थैली) में चालीस चाँदी के रुपया भर कर वे 'पूठरी' नामक गाँव को निकले, गुन्नौर की पैंठ में उन दिनों चमड़े की अच्छी बिक्री होती थी। चमड़े के कारोबार पर चमारों का पुश्तैनी अधिकार था। 'ऊधों' चमड़ा के बड़े व्यापारी थे। वे विदेशों तक चमड़ा सप्लाई किया करते थे। आमदनी थी, इसलिए रोटी-कपड़े खुशहाली भी थी।“[110]

उपर्युक्त पंक्तियों में लेखक ने देशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां 'वांसनी' शब्द का प्रयोग लेखक ने किया है जिसका अर्थ कमर में बंधी थैली होता है।

- -:विदेशज शब्द:--

श्यौराज सिंह बेचैन आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' देशज एवं विदेशज शब्दों का प्रयोग करके आत्मकथा को बोधगम्य बनाया गया है। जिसे निम्न उदाहरणों में दिखाया गया है।

"कई को मैं चाची कहता था। चन्द्रपाल चाचा के घर में भट्ठे से आयी चाची आज भी मौजूद है। दोनों अच्छे पतिपत्नी हैं। चन्द्रपाल मेरे यार लटूरिया के - पाँच -सबसे छोटे चाचा हैं, जिन्होंने पहलवानी बीच में छोड़ दी थी। वे चार दर्जा पढ़े हुए थे। रागनी, ढोला और आल्हा की किताबें बड़े ही सुमधुर कण्ठ से पढ़ते थे। अम्मां उनके स्वर की 'फैन' थी और मैं उनका अनुसरण करता

था। चन्द्रपाल के पिता, दो बड़े भाई और खुद चन्द्रपाल सब पहलवान थे। सन् दो हजार में लन्दन जाने से पूर्व मैं पाली गया था। चन्द्रपाल चाचा की बेटी ने ग्रेजुएशन किया है, यह जानकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।"[111]

इन पंक्तियों में लेखक ने विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां अंग्रेजी भाषा का शब्द 'ग्रेजुएशन' (Graduation) शब्द का प्रयोग लेखक ने किया है जिसका हिंदी अर्थ स्नातक होता है।

"मौसी - मौसा जल्दी दिल्ली छोड़ने की स्थिति में नहीं थे। उनके बनाए हुए मकान में हमें रहने की इजाजत मिल गयी। किराया दिये बगैर हम मौसी के घर में ही रह सकते थे। बाकी रोटी के लिए हमें अपने शरीर आँगन-से काम करना ही था। किराया देने के बजाय घर की सफाई करना हमारी जिम्मेदारी थी। सो यह घर हर दिन साफ करना पड़ता था, क्योंकि बाहर से खुला होने के कारण कुत्ते हर दिन विष्टा कर जाते थे। इस घर की चारदीवारी खड़ी करने की हमारी क्षमता नहीं थी। शौच और पानी के लिए बाहर दूर जाना पड़ता था, जंगल या बम्पुलिस में। मेरे लिए काम तलाशा गया था। मैं छहसात वर्ष का बालक किसी तरह के कठोर काम करने में समर्थ - पॉलिश करना सीखा। यह काम -नहीं था। अतः फूलसिंह और मैंने बूट चन्दौसी के दलित बच्चे आज भी करते हैं। हम रेल में इधर बहजोई, बबराला तक, उधर बिलारी, कुंदरकी तक और बरेली लाइन पर अम्बाला तक बूट-पॉलिश करते हुए चले जाते थे।"[112]

इन पंक्तियों में लेखक ने विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां अंग्रेजी भाषा का शब्द 'बम्पुलिस' शब्द का प्रयोग लेखक ने किया है जिसका सर्वप्रथम प्रयोग ब्रिटिश सरकार ने कानपुर में किया था जिसका हिंदी अर्थ सामूहिक शौचालय होता है।

"पूर्व निश्चित दिन जीजा जी का ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन कक्ष के बाहर मैं और अम्माँ मौजूद थे। ऑपरेशन के बाद जब वे स्ट्रेचर पर लिटा कर बाहर लाये गये तो हम दोनों लपक कर उनके पास पहुँच गये। बैड पर लिटा कर नर्स चली गयी। उनके गले में एक छेद किया गया था। उसमें नली डाली गयी थी। नली से ही उनके पेट में चाय या दूध पहुँचाया जाता और उस

यान्त्रिक प्रक्रिया से उनका कफ, खाँसी, बलगम भी बाहर निकाला जाता था। उस वार्ड में इस तरह कई मरीजों के गलों के ऑपरेशन हुए थे। उनके गले में सीटियाँ डाली गयी थीं। कई मरीजों को मैंने गलों से सीटियाँ लगाये देखा, परन्तु बोलता हुआ एक भी नहीं देखा। इस कारण जीजा जी की आवाज लौटने के प्रति मेरा मन डर और संशय से भरा हुआ था। अब मुझे हर वक्त उनके पास रहने की इजाजत मिल गयी थी। प्रतीक्षा हो रही थी कि जख्म सूखेगा और जल्दी ही गले से सीटी निकाल दी जाएगी और इस तरह उनके गले का इलाज पूरा हो जाएगा। तब कहीं जाकर वे पुनः बोल पाएँगे।"[113]

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां अंग्रेजी भाषा के शब्द 'ऑपरेशन' (Opration), एवं स्ट्रेचर शब्द का प्रयोग लेखक ने किया है।

“सिस्टर जल्दी करो। डॉक्टर साहब, मेरे

जीजा जी की जान बचा लो।"

पर डॉक्टर बहुत देर में आ पाए। वह भी उपकरण रहित । इस विलम्ब और लापरवाही से जीजा के शरीर में रक्त की भारी कमी हो गयी। मैं तुरन्त रूम से बाहर कर दिया गया। पर झाँक कर देखता - सुनता रहा था। ऑक्सीजन का सिलेण्डर वहाँ उपलब्ध नहीं था, दूसरे कक्ष से लाकर डॉक्टर ऑक्सीजन लगा भी नहीं पाए।"[114]

उपर्युक्त पंक्तियों में लेखक ने विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां अंग्रेजी भाषा का शब्द 'सिस्टर' (sister), डाक्टर (doctor), ऑक्सीजन (oxygen) विदेशी शब्दो का प्रयोग लेखक ने किया है।

"भाई साहब नत्थूलाल स्कूल से दोपहर तक घर आ जाते थे। वैसे वे खुद इतना अधिक होमवर्क करते थे कि स्कूल से ज्यादा समय वे घर पर किताबों में सिर गड़ाए रहते थे। वे विज्ञान वर्ग के छात्र थे। उनकी तल्लीनता से लगता था कि उन्हें अपने विषयों में बेहद रुचि थी। पढ़ाई पूरी कर वे मेडिकल डॉक्टर

बनना चाहते थे। वह भी सरकारी स्कूल में पढ़ कर। उस समय शिक्षा का व्यवसायीकरण नहीं हुआ था। जीव विज्ञान के तहत नवीं कक्षा में मेढक आदि की चीरलिखना बोझ -फाड़ वे शुरू कर चुके थे और नरेश पढ़ना-समझता था।"[115]

लेखक ने इन पंक्तियों में विदेशज शब्दों का प्रयोग किया है जिसको शोधार्थी ने अपने स्तर पर खोजा है तथा उसको अपने शोध में दर्शाया है। जैसे यहां अंग्रेजी भाषा का शब्द ' ऑपरेशन ' (opration), डॉक्टर (डॉक्टर) जैसे विदेशज शब्दों का प्रयोग लेखक ने किया है।

<u>कविता में देशज एवं विदेशज:–</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी की कविताओं में देशज एवं विदेशज शब्दों का भावानुकूल वर्णन मिलता है।

"लोहपथगामिनी, रूप की स्वामिनी ।

तेरे संग-संग ज़माना नया आ गया ॥

शीत में तुम गरम, धूप में कूल हो,

तुम समय साध लेने में अनुकूल हो ।

जो भी आया उसी का किया वैलकम

जो गया उसके हक में सन्देशा दिया

आया गन्तव्य है तो उतर जाइये

भूलकर छोड़ कर कुछ नहीं जाइये

ऐसी तहज़ीब पर कोई निछावर न हो,

जो सफ़र की समस्या का हल पा गया।

ताज को मात करती सचल सुन्दरी

तुम जो दिल्ली में आयीं तो दिल आ गया।"[116]

बेचैन जी ने अपनी कविताओं में देशज तथा विदेशज शब्दावली का प्रयोग

किया है जिससे इनकी कविताएं ऐसी प्रतीत होती हैं कि एक आम व व्यावहारिक भाषा में उन्होंने अपनी रचना को रचा है प्रस्तुत पंक्तियाँ इनकी कविता 'भोर के अंधेरे में' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में लोहपथगामिनी, स्वामिनी आदि कई देशज शब्दों का प्रयोग किया है तथा वैलकम जैसे कई विदेशी शब्द भी अपनी रचना में प्रयोग किया है। जिससे इनकी रचना बहुत ही आकर्षक जान पड़ते हैं।

"परन्तु संगीत भी सोये हुओं को जगाता है, यह बात सर्वमान्य है, बल्कि निष्प्राण हो चुके प्राणी में भी प्राण लौटाता है। इसका एक दिलचस्प उदाहरण बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने अपने 'मूकनायक' मराठी पत्र में एक 'रोचक -समाचार' स्तम्भ के रूप में प्रकाशित किया था। समाचार था 'न्यूयॉर्क नगर में श्रीमती डोरामांच नामक संगीतप्रिय रमणी इन्सेफेलाइटिस (-Encephalitis) नामक रोग से ग्रस्त होकर दो दिनों तक लगातार सोती रहीं। उन्हें जाग्रत करने वाले चिकित्साशास्त्रों का उन पर कोई उपाय कारगर नहीं हुआ। तब अन्त में -शनैः निद्रा से जागने -आलाप सुनकर वे शनैः-एक तन्तुवाद्य निपुण का संगीत लगीं।"[117]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपनी कविताओं में देशज तथा विदेशज शब्दावली का प्रयोग किया है जिससे उनकी कविताएं बोलचाल एवं आम व व्यावहारिक भाषा में उन्होंने अपनी रचना को रचा है ये पंक्तियां उनकी कविता 'भोर के अंधेरे में' की भूमिका से उद्धृत है। इन पंक्तियों में इन्सेफेलाइटिस आदि कई विदेशी शब्द भी अपनी रचना में डाले हैं। जिससे इनकी रचना आकर्षक जान पड़ती हैं।

"कैपिटेशन फीस देकर

दाखिले के लिए

प्राइवेट कालेज को घूस देकर

ख़रीद लाया

लाला का बेटा

एम.बी.बी.एस. एम.डी. की डिग्री।"[118]

कवि ने अपनी कविताओं में देशज तथा विदेशज शब्दावली का प्रयोग किया है जिससे एक आम व व्यावहारिक भाषा में उन्होंने अपनी रचना को रचा है। ये पंक्तियां इनकी कविता 'भोर के अंधेरे में' की भूमिका से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कैपिटेशन, डिग्री आदि कई विदेशी शब्द भी अपनी रचना में डाले हैं। जिससे इनकी रचना आकर्षक जान पड़ती हैं।

<u>कहानी में देशज तथा विदेशज शब्द:–</u>

श्यौराज सिंह बेचैन की कहानियों में भाषा के सभी शब्दावलीयों का समावेश किया गया है जो भाषा एवं समाज को समृद्ध बनाती है।

"अरे! मर्दनु में औरत के गुन कौन देखत है? सब कसाई की तरह माँस चमड़ी देखे हैं, तनिक गोरी देखी और लार टपकन लागी। जा बेचारी के गुन- अवगुन किन्ने देखे हैं?" दूसरी बोली, "तेरे मर्द की लार गोरी छोरी देख के टपकति होइ गी बहना, मेरो मर्द तो मेरे अलावा काऊ और कूँ आँख उठाइ के नाँइ देखतु, सभी कू माँ-बहन समझतु है, जैसी है अच्छी है। हो पर है तो बिचारी बच्ची, खेलिवे- पढ़िवे की उमरि है बाकी ।"[119]

बेचैन जी द्वारा रचित उपर्युक्त पंक्तियां 'हाथ तो उग ही आते हैं' कहानी संग्रह की कहानी 'घूंघट हटा था क्या? से ली गई हैं और इन पंक्तियों में अपनी जन्मभूमि की भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है जिसमें देशज शब्द हमें भरपूर मात्रा में देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी एक आकर्षक स्थान पर पहुंच जाती है।

"बच्चू स्वयं भी संगीत प्रिय स्वभाव का किशोर था। हालाँकि न उसके पास वाद्ययन्त्र थे, और न कोई प्रशिक्षण। पर प्रकृतिदत्त कला अवश्य थी, जो उसके कण्ठ से अक्सर फूटती रहती थी। उसी तरह 'लाडो' गाती थी। चन्दा से बतियाती थी, तारों को पास बुलाती थी। पर घूँघट नहीं उठाती थी। पढ़ने-लिखने के अन्तराल में तितली-सी उड़ जाती थी। स्कूल में वह दसवीं में ही गायन प्रतियोगिता जीती थी। यह उसकी पर्सनैलिटी का सच बच्चू के सपने में कैसे आया? वह सोच ही रहा था कि उसी क्षण बस के आगे ट्रक आ गया। चालक ने ज़ोर से ब्रेक मारी, कई यात्रियों के सिर सामने की सीटों से टकराये। एक यात्री गाली देता हुआ चिल्लाया । तेरी... साले ड्राइविंग कर रहा है या कुटाई कर रहा है। हरिद्वार पहुँचायेगा या सीधा स्वर्गधाम? बच्चू ने झटका

क्या खाया कि सपने वाला ख़ज़ाना ही गँवा दिया? वह भड़भड़ा कर उठा और सावधान हो कर सीट पर बैठ गया। 'अब हम हरिद्वार पहुँच रहे हैं' परिचालक ने प्रसन्नता के स्वर में समाचार दिया।"[120]

उपर्युक्त पंक्तियां 'हाथ तो उग ही आते हैं' कहानी संग्रह की कहानी 'घूंघट हटा था क्या?' से ली गई हैं और जिसमें देशज शब्द जैसे 'लाडो', कण्ठ, तथा विदेशज शब्द 'पर्सनालिटी' 'ब्रेक' जैसे शब्द,हमें भरपूर मात्रा में देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी आकर्षक लगती है।

"उधर चौधरी बलाधीन वापस घर पहुँच गये। गाँव की सीमा में घुसते ही उन्हें अपनी पत्नी की हालत का पता चल गया। कोई उसे अस्पताल नहीं ले गया है। औरतें बतियाती जा रही थीं- 'बहुएँ बेमौत ना मरेंगी तो क्या अमर होंगी? बच्चियाँ बच्चे पैदा करेंगी तो कच्ची मिट्टी-सी काया का क्या होगा? घड़े की तरह फूट ही जाएँगी। हाथी जैसा चौधरी चुहिया जैसी बच्ची पर पाँव भी रखेगो तो, उन्हें मौत के मुँह में धकेलेगो या जिन्दगी के सुहाने सफ़र की ओर ले जाएगो? अरी! मौत तो बाकी वाही दिन तय हो गयी हती जब वह फूल-सी बच्ची जा पत्थर से अधेड़ के संग बाँध दई।"[121]

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'हाथ तो उग ही आते हैं' कहानी संग्रह की कहानी 'घूँघट हटा था क्या?' से ली गई हैं। जिसमें देशज शब्द बहुएं, कच्ची, कया, घड़े, मोह आदि हमें भरपूर देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी एक आकर्षक बन जाती है ।

"फिर एक मौका आया कि 'सवली' पढ़ने के उद्देश्य से अब्रॉड चली गयी और भोरवती वहीं बनी रही। ग़रीब की बेटी भोरी शुरू से ही प्रतिभाशाली थी। उसने अच्छे परिणाम के साथ स्कूली पढ़ाई पूरी कर ली थी और अब वह कॉलेज जाने लगी थी। उसने बी.ए. कोर्स में दाखिला ले लिया था। उसके पास स्कूल के दिनों में केवल एक ही 'स्कूल ड्रेस' हुआ करती थी। कॉलेज में कुर्ती बनवा दी थी। -पहुँची तो उसके पिता कर्मदास ने उसे एक सादा सलवार पहन कर कॉलेज जाती थी और घर लौट कर उसे -वह हर दिन उसे ही धो सँभाल कर रख देती थी। शहर में हो चुके आउट डेटिड फ़ैशन के अपने पहने हुए एकदो ड्रेस स-वली उसे दे जाया करती थी।"[122]

ये पंक्तियां बेचैन जी के 'हाथ तो उग ही आते हैं' कहानी संग्रह की कहानी

हमशक्ल से ली गई हैं। जिसमें देशज शब्द 'प्रतिभाशाली', 'सवली' तथा विदेशज शब्द जैसे 'अब्रॉड', आउट डेटेड फ़ैशन, कॉलेज आदि हमें भरपूर देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी आकर्षक बन जाती है।

हमने तो कोई जात नहीं बनायी ना?" प्रतिवाद में एक दो डायलॉग उसने वोले। मसलन, क्या तुम जाति का लाभ लेना नहीं छोड़ सकते? क्या तुम सरनेम की मार्फत जाति जताते नहीं हो? जाति के नाम पर मिलने वाला हलुवा-मलीदा खाते नहीं हो? प्रकेश की कन्वेसिंग पावर ग़ज़ब की थी। अन्ततोगत्वा माधवी उससे हार गयी और वह आत्मालाप करने लगी कि 'बेकार मेरे मन में एक नीची जाति की लड़की का सवाल आया। कहीं भाग गयी होगी। छोटी जातियों में किरदार और खुद्दारी जैसी चीज़ें होती ही कहाँ हैं? इनमें सेल्फ रेस्पैक्ट का तत्त्व मर गया होता है। ये तो ग़ैर-कौम के मर्दों से जुड़ने में ही धन्य समझती हैं अपने आपको। माना वह ससुर साहब की सहानुभूति की पात्रा थी। प्रकेश ने भी उसे ट्यूशन पढाया था, वह भी शौकिया तौर पर तो इसमें उपकार ही किया, तो बुरा क्या किया? मैं भी ना कभी-कभी उल्टा चिन्तन करने लगती हूँ।"[123]

उपर्युक्त पंक्तियाँ बेचैन जी के 'हाथ तो उग ही आते हैं' कहानी संग्रह की कहानी 'हमशक्ल' से ली गई हैं। जिसमें देशज शब्द हलवा, मलीदा, मार्फत तथा विदेशज शब्द जैसे डायलॉग, ट्यूशन, रिस्पेक्ट आदि हमें भरपूर देखने को प्राप्त होते हैं जिससे उनकी कहानी आकर्षक एवं बोधगम्य लगती है।

"सुधांशु ने प्रश्न किया तो वह कहने लगी, "मुझे तुम्हारे दोगले विचार पसंद नहीं हैं। तुम्हारी कथनी और करनी में अन्तर है, तुम्हारे अन्दर पारदर्शिता नहीं है।" प्रणीता एक साँस में बोलती चली गई। उसकी यह बोल्डनैस सुधांशु को गहरे तक चुभ गई। अपनी असह्य तिलमिलाहट को छिपाते हुए वह बोला, "तुम ऐसा कैसे सोच सकती हो मेरे बारे में? कभी कहती हो इनह्यूमन हूँ तो कभी कहती हो अनैतिक हूँ और कभी कहती हो दोगला हूँ। तुम्हें ऐसा कहते हुए बिलकुल नहीं लगता कि मैं एक हाई क्वालिफाइड व्यक्ति हूँ और मैं जो भी सोचताकरता हूँ वह सब करता तो अपनी सोसाइटी के इंटरेस्ट में हूँ - आखिर हमारे इंटरेस्ट तो कॉमन ही होने चाहिए।"[124]

प्रस्तुत पंक्तियां बेचैन जी के 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कहानी संग्रह की कहानी 'क्रीमी लेयर' से ली गई हैं जिसमें देशज शब्द 'प्रतिभाशाली', 'सवली' तथा विदेशज शब्द जैसे बोल्डनेस, इन्हुमन, सोसाइटी, इंट्रेस्ट, कॉमन आदि हमें भरपूर देखने को मिलते हैं जिससे इनकी कहानी एक आकर्षक स्थान पर पहुंच जाती है। जो की शोध कार्य में बहुत ही विस्तृत रूप में रुपायित किया है।

"यही कि वे दोनों कौन थीं, उनके साथ क्या हुआ था और वे दोनों कौन थे जिन्होंने ऐसा कुछ किया जिससे तुम्हारे भाई की मैंटेलिटी एण्टी एससी/एसटी बनी।" प्रणीता ने एक साँस में सारी जिज्ञासा ज़ाहिर कर दी। पूरे वाक्यात से वाकिफ़ आकांक्षा को प्रश्न समझते देर नहीं लगी और वह बताने लगी। पर वह घर का पक्ष लेकर कहने लगी, "यह मेरे घर का मामला है। मैं अपने पिता और अपने भाई को प्रभावित करने वाली कोई बात नहीं कहूँगी।" इस पर प्रणीता ने कहा, "हम सब स्त्रियाँ हैं, हमें स्त्रियों की चिंता करनी चाहिए। फिर उन दोनों से तुम्हारा कोई तो रिश्ता होगा ?" तो वह कहने लगी, "हमारी छोटी बुआ और बड़ी दीदी अंग्रेज़ी की एक ही क्लास में पढ़ती थीं। सुधांशु भैया को बहुत प्यार करती थीं। बुआ बाल विधवा थीं और दीदी फ़िज़िकल चैलेंज्ड। इत्तेफ़ाक यह था कि दो लड़के (एक एससी और दूसरा एसटी) भी उसी क्लास में पढ़ते थे।"[125]

ये पंक्तियां बेचैन जी की 'मेरी प्रिय कहानियाँ कहानी संग्रह की कहानी 'क्रीमी लेयर' से ली गई हैं। जिसमें देशज शब्द इत्तेफाक, वाकिफ, तथा विदेशज शब्द जैसे मेंटेलिटी, एंटी, क्लास, ़फिज़िकल चैलेंज्ड', आदि हमें भरपूर देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी आकर्षक एवं बोधगम्य लगती है। जिनसे उनकी रचना और भी सुंदर बन जाती है।

"पुनीता का बोर्ड के कुछ ही मिनट पहले देर से जाना और सब्जैक्ट एक्सपर्ट से मिलना, साक्षात्कार दात्रियों के मन में शंका पैदा कर गया था। यहाँ तक कि देवकी पासी ने शंका व्यक्त की थी कि-"इंटरव्यू तो फेयर होने से रहा। जब किसी का गाइड ही एक्सपर्ट बन कर आया हो, तो चांस उसी के बनते हैं।" हालांकि प्रो. तिवारी उसके होने वाले श्वसुर भी हैं, यह देवकी को ज्ञात नहीं था। रिजर्व पोस्ट है तो फेयर भी हो सकता है। आखिर कॉलेज तंत्र को एक योग्य टीचर की जरूरत भी तो है।" रेनू ने स्वयं को ध्यान में रख कर मन

बहलाया। पर मनों में ऐसे द्वंद्व लेकर कैन्डीडेट्स बैठी बतिया रहीं थीं। इंटरव्यू की कॉल शुरू हुई "शीला देवी'-शीला उठी नामों के सूची पत्र पर हस्ताक्षर किए और प्रमाण पत्रों की जांच करा कर अंदर बोर्ड के समक्ष चली गई।।"[126]

प्रस्तुत पंक्तियां बेचैन जी के 'भरोसे की बहन' कहानी संग्रह की कहानी 'होनहार बच्चे' से ली गई हैं जिसमें देशज शब्द 'साक्षात्कार दात्री', 'श्वसुर' तथा विदेशज शब्द जैसे इंटरव्यू, सब्जैक्ट, एक्सपर्ट, कॉलेज आदि हमें भरपूर देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी आकर्षक बन जाती है।

"प्लीज, डोनेशन जैसे होली वर्ड को आप पैसा मत कहिए, यह दान- सेवार्थ गए महान दान का एक रूप है। खुलासा ही चाहते हो तो इस का मतलब होता है सोशल एड फार बिल्डिंग फी, एम्फरा स्टैक्चर फी, एटमोसफेयर फी, स्वीमिंग पूल फैसल्टी फी, रूम. ए. सी. फी, ट्रांसपोर्ट फी, को-करिकुलम - एक्टविटीज चार्ज, आउटडोर विजिटिंग चार्ज, इत्यादि पर होने वाला खर्च शामिल है। कहते हुए चेयरमैन ने इशारा किया और क्या जानते हो चंदन ? प्रिंसिपल मैम ने भी अपना सवाल जोड़ दिया था। जी मात्र एक श्लोक का मतलब जान पाता हूँ मैडम।

"वह क्या?

यह कि बचपन से ही मैं अपनी मां को चिढ़ाया करता था उसे सुना-सुना कर कि--

माता शत्रु, पिता बैरी,

येन बालों न पाठित:।

न शोभते सभा मध्ये,

हंस मध्ये बको यथा। "[127]

ये पंक्तियां बेचैन जी के 'भरोसे की बहन' कहानी संग्रह की कहानी 'नॉन रिफंडेबल' से ली गई हैं। जिसमें देशज शब्द 'श्लोक', स्वार्थ, तथा विदेशज शब्द जैसे 'प्लीज' , डोनेशन, बिल्डिंग, एम्फरा स्ट्रक्चर, सोशल एड फार बिल्डिंग फी, एम्फरा स्टैक्चर, एटमोसफेयर, स्वीमिंग पूल फैसल्टी फी, रूम. ए. सी. फी ट्रांसपोर्ट फी, को-करिकुलम - एक्टविजीज चार्ज, आउटडोर

विजिटिंग चार्ज, आदि हमें भरपूर देखने को मिलते हैं जिससे उनकी कहानी बोधगम्य स्तर पर पहुंच जाती है। जो की शोध कार्य में बहुत ही विस्तृत रूप में रुपायित किया है।

निष्कर्ष:--

प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में भाषा के नए - नए प्रयोग दिखाई देते हैं। शिल्प की दृष्टि से उनका साहित्य महत्वपूर्ण है। लेखक ने शिल्प के माध्यम से ही आत्मकथा, कविता, कहानीयों, निबंधों, आलोचनाओं में मोहकता, सरलता, स्पष्टता रोचकता मौलिकता को दर्शाया है। साहित्य के शिल्पगत अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि श्यौराज सिंह बेचैन ने भाषा और शैली के प्रति जागरूकता दिखाई है। शिल्प के जो तत्व हैं पात्र एवं चरित्र चित्रण, संवाद-योजना, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, सभी तत्वों की सफल अभिव्यक्ति उनके साहित्य में हुई है। स्त्री पात्रों का मूल्यांकन को प्रधानता देने के लिए कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियां एवं लोकगीतों का समावेश रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है और साहित्य में लोक साहित्य का समावेश एवं आंचलिक बोलियों का चित्रण प्रो. बेचैन ने किया है। इसके साथ उसमें अरबी फारसी, तत्सम, तद्भव, देशज, अंग्रेजी, भोजपुरी, उर्दू आदि शब्दों का चित्रण रचनाओं में प्रभावी भाषा शैली को दर्शाता है। कविताओं और कहानियों में विभिन्न शैलियों का चित्रण हुआ है। उसमें फ्लैशबैक शैली, निबंधात्मक शैली, चित्रात्मक या फोटोग्राफी शैली, वार्तालाप या संवादात्मक शैली, डायरी शैली, लोक कथात्मक शैली, लोकगीतात्मक शैली आदि शैलियां कथा-साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। प्रो. बेचैन ने ग्रामीण एवं शहरी यथार्थ को अपने रचनाओं का विषय बनाया है। साथ ही रचनाओं में शिल्प की विभिन्न विशेषताओं का भी निर्वाह किया गया है जिससे प्रभावोत्पादक बना हुआ है।

–: संदर्भ सूची :–

1. **www.wikkipedia.com**
2. https://www.easyhindivyakaran.com/, दिनाँक--10/01/2018
3. वही, दिनाँक:--10/01/2018
4. वही, दिनाँक-- 10/01/2018
5. वही, दिनाँक--10/01/2018
6. https://www.scotbuzz.org/, दिनाँक -- 10/01/2018/.
7. वही, दिनाँक--15/01/2018
8. वही, दिनाँक--15/01/2018
9. वही, दिनाँक--15/01/2018
10. वही, दिनाँक--20/01/2018
11. https://vishwahindijan.blogspot.com, दिनाँक--20/01/2018
12. वही, दिनाँक--20/01/2018
13. वही, दिनाँक--20/01/2018
14. वही, दिनाँक--20/01/2018
15. वही, दिनाँक--20/01/2018
16. https://hindigrammar.in.,दिनाँक--22/01/2018
17. https://hindigrammar.in, दिनाँक--22/01/2018

18. https://hi.wikipedia.org/, दिनाँक--22/01/2018
19. वही, दिनाँक--22/01/2018
20. वही, दिनाँक--22/01/2018
21. बिम्ब/ बिम्बवाद(bimb/bimbavad) - Hindi Best Notes.com,दिनाँक--22/01/2018
22. वही, दिनाँक--22/01/2018
23. वही, दिनाँक--22/01/2018
24. वही, दिनाँक--22/01/2018
25. वही, दिनाँक--22/01/2018
26. वही, दिनाँक--25/01/2018
27. वही, दिनाँक--25/01/2018
28. वही, दिनाँक--25/01/2018
29. वही, दिनाँक--25/01/2018
30. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर - आत्मकथा, पृष्ठ संख्या –१४१
31. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर - आत्मकथा, पृष्ठ संख्या—१४४
32. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर - आत्मकथा, पृष्ठ संख्या—१५१
33. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा,पृष्ठ संख्या—३३
34. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या—७०

35. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या –३३

36. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या७०--

37. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या—७७

38. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या—११५

39. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या—२१५

40. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या –२६२

41. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धों पर – आत्मकथा, पृष्ठ संख्या – २७७

42. श्यौराज सिंह बेचैन, कहानी - घूंघट हटा था क्या, हाथ तो उग ही आते हैं - कहानी संग्रह, पृष्ठ संख्या—२९०

43. श्यौराज सिंह बेचैन-, कहानी संग्रह भरोसे की बहन, कहानी-क्या करे लड़की, पृष्ठ संख्या २९५--

44. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं-कहानी संग्रह, पृष्ठ संख्या२९--

45. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियां, कहानी – क्या करे लड़की, पृष्ठ संख्या२७---२८

46. श्यौराज सिंह बेचैन, कहानी संग्रह- भरोसे की बहन, कहानी-क्या करे लड़की, पृष्ठ संख्या--७६

47. श्यौराज सिंह बेचैन, कहानी संग्रह- भरोसे की बहन, कहानी - नॉन रिफंडेबल, पृष्ठ संख्या८३--

48. श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन- कहानी संग्रह, भरोसे की बहन-कहानी, पृष्ठ संख्या८५--

49. श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन- कहानी संग्रह, कहानी -हंसा की, पृष्ठ संख्या१३१--

50. श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन- कहानी संग्रह, भरोसे की बहन कहानी, पृष्ठ संख्या-१३८-१३९

51. श्यौराज सिंह बेचैन,भरोसे की बहन- कहानी संग्रह, कहानी हंसा की कहानी, पृष्ठ संख्या:६७---६८

52. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, कहानी - कार्ड संख्या 2118, पृष्ठ संख्या-- १२४

53. श्यौराज सिंह बेचैन, नई फसल कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या—१९

54. श्यौराज सिंह बेचैन, क्रौंच हूं मैं कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या—२४

55. श्यौराज सिंह बेचैन, क्रौंच हूं मैं कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या—२४

56. श्यौराज सिंह बेचैन, क्रौंच हूं मैं कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या—८२

57. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा - मेरा बचपन मेरे कंधो पर, पृष्ठ संख्या—१७८

58. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं-कहानी संग्रह, कहानी - हमशक्ल, पृष्ठ संख्या१९--

59. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, कहानी -हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या२१--

60. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं- कहानी संग्रह,घूंघट हटा था क्या?, पृष्ठ संख्या३४--

61. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, कहानी - हमशक्ल, पृष्ठ संख्या –४४

62. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, कहानी - आग और फूंस, पृष्ठ संख्या६१--

63. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, कहानी - आग और फूंस, पृष्ठ संख्या८२--

64. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, वह अम्मा जैसी थी, पृष्ठ संख्या –१०१

65. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं- कहानी संग्रह, कहानी - छोटू, पृष्ठ संख्या१४८--

66. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, पृष्ठ संख्या – १५०

67. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, पृष्ठ संख्या-- १५६

68. श्यौराज सिंह बेचैन, नई फ़सल कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या-- ८८

69. वही, पृष्ठ संख्या—११४

70. वही, पृष्ठ संख्या –११४

71. वही, पृष्ठ संख्या१२९--

72. श्यौराज सिंह बेचैन, चमार की चाय कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या – ११७

73. वही, पृष्ठ संख्या – १४७

74. वही, पृष्ठ संख्या –१४६-१४७

75. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या—५७

76. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या – ६४

77. वही, पृष्ठ संख्या –७६

78. वही, पृष्ठ संख्या –१२६

79. वही, पृष्ठ संख्या -- १८७

80. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कंधो पर-आत्मकथा, पृष्ठ संख्या – १७९

81. श्यौराज सिंह बेचैन, क्रौंच हूं मैं कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या-- ०४

82. वही, पृष्ठ संख्या – २१

83. वही, पृष्ठ संख्या२२--

84. वही, पृष्ठ संख्या-- १३-१४

85. श्यौराज सिंह बेचैन, नई फ़सल कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या—५५

86. वही, पृष्ठ संख्या – ४७

87. वही, पृष्ठ संख्या-- ६३

88. वही, पृष्ठ संख्या – ६५

89. वही, पृष्ठ संख्या – ६७

90. वही, पृष्ठ संख्या –६९

91. वही, पृष्ठ संख्या –९३

92. वही, पृष्ठ संख्या – ९७

93. वही, पृष्ठ संख्या – १४३

94. श्यौराज सिंह बेचैन, क्रोंच हूं मैं कविता संग्रह, पृष्ठ संख्य - ३५--

95. वही, पृष्ठ संख्या५५--

96. श्यौराज सिंह बेचैन, नई फसल कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या- १०७

97. वही, पृष्ठ संख्या – ११०

98. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या-- ७९

99. वही, पृष्ठ संख्या –११९

100. वही, पृष्ठ संख्या –१९४

101. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी ग्रह, आग और फूंस- कहानी, पृष्ठ संख्या –९६

102. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, आग और फूंस कहानी-, पृष्ठ संख्या –९९

103. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह,हाथ तो उग ही आते हैंकहानी- , पृष्ठ संख्या –११८

104. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह,हाथ तो उग ही आते हैं- कहानी, पृष्ठ संख्या –९९

105. वही, पृष्ठ संख्या—११८

106. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कंधो पर -आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -२९९

107. वही, पृष्ठ संख्या—८६

108. वही, पृष्ठ संख्या – ७६

109. वही, पृष्ठ संख्या – ९७

110. वही, पृष्ठ संख्या – ६७

111. वही, पृष्ठ संख्या –७३

112. वही, पृष्ठ संख्या११८--

113. वही, पृष्ठ संख्या—११९

114. वही, पृष्ठ संख्या२०४---२०५

115. वही, पृष्ठ संख्या—२१२

116. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में कविता संग्रह, पृष्ठ संख्या –०९

117. वही, पृष्ठ संख्या –२१७

118. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, घूंघट हटा था क्या?-कहानी, पृष्ठ संख्या२०--

119. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, घूंघट हटा था क्या?--कहानी, पृष्ठ संख्या२९--

120. वही, पृष्ठ संख्या -- ३०

121. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं कहानी संग्रह, हमशक्ल-कहानी, पृष्ठ संख्या-- ४५

122. वही, पृष्ठ संख्या-- २५

123. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियाँ - कृमि लेयर – कहानी, पृष्ठ संख्या-- १६

124. वही, पृष्ठ संख्या २५--

125. श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन- कहानी संग्रह : कहानी - होनहार बच्चे, पृष्ठ संख्या -- ४८

126. श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन- कहानी संग्रह, कहानी- नॉन रिफंडेबल, पृष्ठ संख्या-१२४

*****